मेरा राजस्थान

वर्ष-२०, अंक- ०७, मुम्बई, सितंबर २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४० मूल्य -१००.०० रूपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

सभी भारतवासियों को दधीचि जयंती की बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनाएं

TALCO ALUMINIUM COMPANY

MANUFACTURER OF ALUMINIUM EXTRUSION PROFILES SECTIONS

Architectural, Structural, Transport, Electrical, Solar, Industrial Profile & Sections

● REGD OFFICE ●

D-85/1 GNT ROAD, PONNIAMMANMEDU,
MADHAVARAM, CHENNAI,
TAMIL NADU, BHARAT - 600110

email: talcochennai@talco.in
www.talco.in

Remove India Name From the Constitution India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

http:// www.merarajasthan.co.in

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

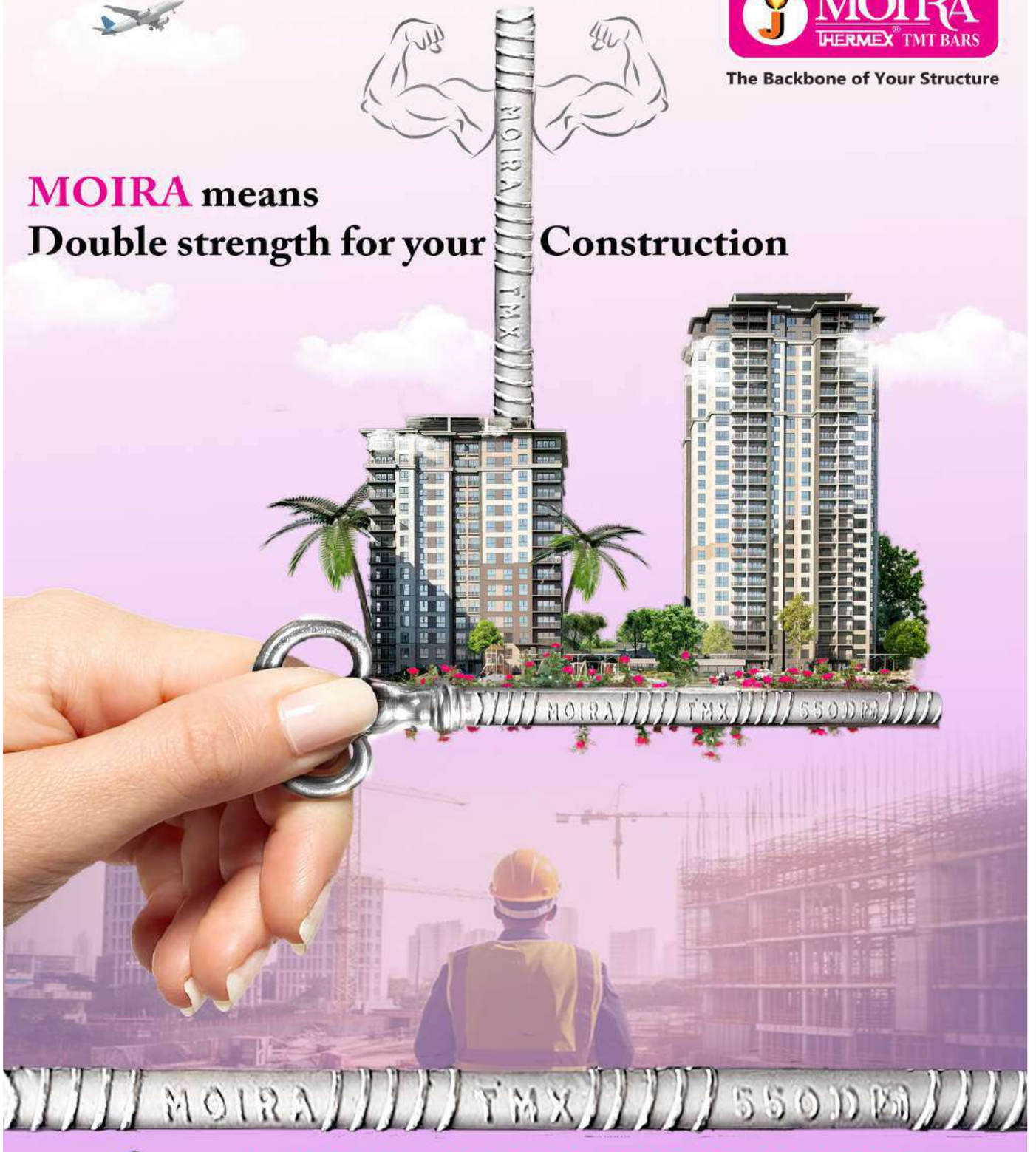

MOIRA THERMEX TMT BARS
The Backbone of Your Structure
MOIRA means
Double strength for your Construction
Available In : Fe 550, Fe 550D, Fe 600 & CRS
JAIDEEP METALLICS
& Alloys Pvt. Ltd.
106 / 107 / 108, 1st Floor, Neha Ind. Estate, Behind CCI Ltd., Off Dattapada Road, Borivali (E),
Mumbai - 400 066. Phone : +91 2242032000 Fax : +91 22 42032020
Email : ajay@moiratmt.com | marketing@moirantmt.com

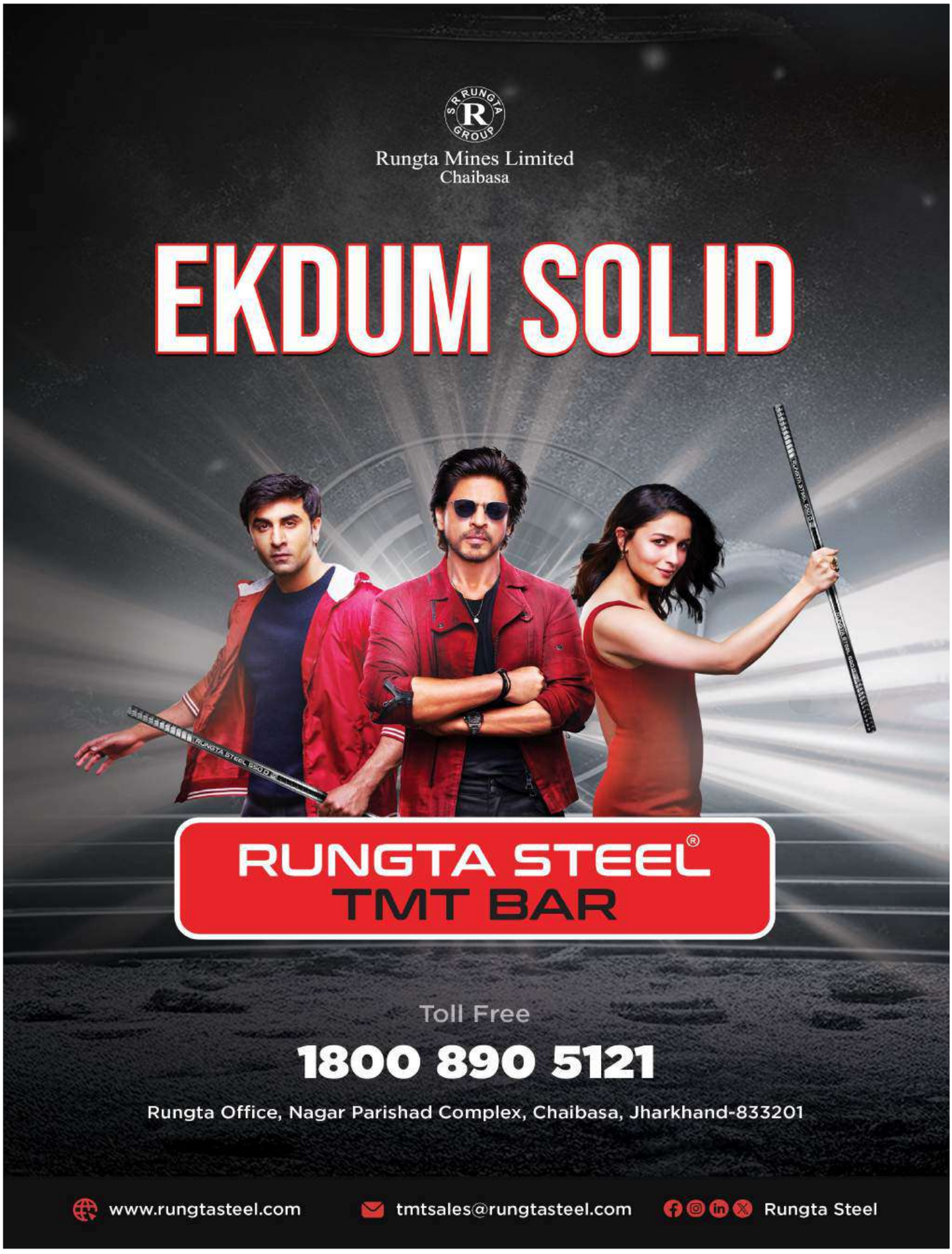

Rungta Mines Limited
Chaibasa
EKDUM SOLID
RUNGTA STEEL®
TMT BAR
Toll Free
1800 890 5121
Rungta Office, Nagar Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand-833201
www.rungtasteel.com
tmtsales@rungtasteel.com
Rungta Steel

०७ महान तपस्वी, महादानी...

०८ गौरी शंकर राठी बने अध्यक्ष...

१२ वैदिक ऋषि अथर्व के पुत्र...

२४ सृष्टि के रचयिता...

२७ भगवती दधिमती का...

सितंबर २०२५ के अंक की झलकियाँ

और भी बहुत कुछ....

'मेरा राजस्थान' अक्टूबर २०२५ री विशेषतावां

महाराजा अग्रसेन

जाति पाति और ऊँच-नीच का जिसने भेद हटाया
वो परम प्रतापी महाराजा अग्रसेन कहलाया

महाराजा अग्रसेन जयंती पर विशेष

AMRISHCHANDRA AGARWAL

CHAIRMAN – AGARWAL GROUP OF COMPANIES

AGARWAL GROUP OF COMPANIES
Where YOU matter

AGARWAL FLORENCE

CTS NO. 905, 1 TO 15, VILLAGE PAHADI,
PIRAMAL NAGAR, GOREGAON WEST, MUMBAI- 400 104
TEL: 022 4960 3434 / 3535 / 3636

वर्ष-२०, अंक ७, सितंबर २०२५

१२ अंक वार्षिक १२००/-

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसम्पादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो. 9702205252

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक
स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई

सम्पर्क करें...
सम्पादकीय कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

बी- २१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व,
मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059. दूरध्वनि - 022- 4015 8094

भ्रमणध्वनिः 9322307908

अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com
mainbharathunfoundation@gmail.com
अन्तरताना : http//: www.merarajasthan.co.in
http//:www.bijayjain.com

संपादकीय ....

महा-महादानी महर्षि दधीचि के चरणों में प्रणाम

कहते हैं दानी, महादानी, सैकड़ों हुए होंगे इस धरती पर, पर महा-महादानी एक ही हुए हैं 'महर्षि दधीचि' जिन्होंने देवताओं की रक्षार्थ अपने शरीर के वज्रा का भी दान कर दिया, जिसकी मिसाल 'भारत' के हर ग्रंथ में उल्लेखित है, उन्हीं की जयंती पर उनके चरणों में प्रणाम करते हुए सभी 'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठकों व 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के अंतरराष्ट्रीय मानद् सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं व बधाइयां देते हुए लिखता हूं कि 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, 'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत' अभियान को मिल रहे समर्थन के लिए बेहद खुश हूं।

विश्वास दिलाता हूं की विश्व के मानचित्र GLOBE में वर्ष २०२६ तक,जहां अपने देश का नाम केवल INDIA लिखा हुआ है, वहां BHARAT लिखा जा सकेगा।

मैं 'महर्षि दधीचि' जी के चरणों में प्रणाम करते हुए उनका आशीर्वाद चाहता हूं कि हम और हमारा 'भारत' आगे ही आगे बढ़ता रहे, भारतीयता व भारतीय संस्कृति का बोलबाला गूंजता रहे, एक दूसरे का आदर-सम्मान होता रहे, ताकि 'जय भारत' अभियान का भी गुणगान बढ़ता रहे। बहुत ही खुशी की बात है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत जी ने एक विशाल सभा को उद्बोधन करते हुए कहा कि मैं कभी अपने देश को INDIA नहीं बोलता और अपने आप को INDIAN नहीं बोलता, मैं 'भारतीय' हूं और मेरे देश का नाम केवल 'भारत' है। सोचनीय विषय यह है कि नाम का कभी अनुवाद होता है भला! विचार कीजिए! हम हिंदी में अपने देश को BHARAT व अंग्रेजी में INDIA कहते हैं, नाम NOUN होता है, मैं आपसे पूछता हूं कि यदि किसी का नाम 'गोपाल' है तो क्या उसे अंग्रेजी में COW HEARD बोल सकते हैं भला, आईए! हम सब मिलकर विश्व में हमारे देश का प्राचीनतम नाम 'भारत' की पहचान बढ़ायें, ताकि हम सभी अपने आपको केवल 'भारतीय' कह सकें, दो नाम की जरूरत ही क्या है?

'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठकों से गत वर्ष कुछ भी मेरे लेखन, कथन द्वारा भूल हुई हो, तो 'मिच्छामी दुक्कड़म', 'खमत खामणा', उत्तम क्षमा बारंबार यानी कि 'क्षमा याचना' का निवेदन करता हूं।

जय-जय राजस्थान! जय भारत!

महान तपस्वी, महादानी, महात्यागी महर्षि दधीचि को मेरा शत्-शत् प्रणाम!!!

आज कोई किसी से दान माँगता है तो देनेवाला एक बार जरुर सोचता है, परन्तु जब देवता महर्षि दधीचि से प्रार्थना करने लगे कि उनकी अस्थियों से जो अस्त्र बनेंगे उसी से वृत्तासुर का वध हो सकता है, उस वक्त महर्षि ने एक पल भी बिना किसी बारे में सोचे, तुरन्त हँसकर बोले, ''देवताओं! यह शरीर तो नाशवान है, यदि इस शरीर से संसार का हित होता है तो ले लो, शीघ्रता करो, गृहस्वामिनी के आने से पहले यह दान ले लो'' उन्हें यह पता था कि गृहस्वामिनी के आने पर दान में विलम्ब हो सकता है, उन्होंने महादान 'अस्थिदान' किया जिस अस्थियों द्वारा ८२० राक्षसों का संहार हुआ।

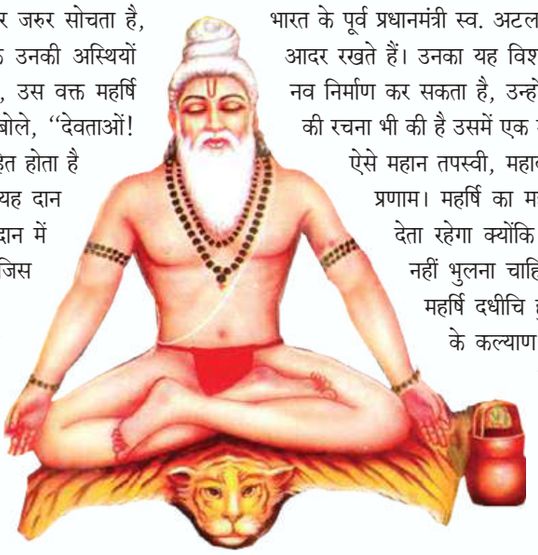

श्री सावित्री खानोलकर ने वीरता के लिये पहचाने जाने वाला सर्वोच्च सम्मान 'परमवीर चक्र' के प्रारुप बनाते वक्त महर्षि दधीचि से प्रेरणा ली थी। परमवीर चक्र के रुप उन्होंने वज्र बनाया (वज्र बनाने के लिये ही महर्षि ने अस्थिदान किया था) और दूसरी और शिवाजी की तलवार बनाई, यह परमवीर चक्र १६ अगस्त १९९९ को अस्तित्व में आया।

महात्मा गाँधी जी ने विश्वंदन, विश्व उद्धारक, त्यागमूर्ति महर्षि दधीचि का मन्दिर जहाँ पर था, वहीं पर १७ जुन १९१७ को साबरमती आश्रम की स्थापना की थी। २७ जुन १९२४ को इसी स्थान पर राष्ट्रीय काँग्रेस महासमिति का अधिवेशन हुआ था, इस अधिवेशन के सिंहद्वार पर गाँधीजी ने उन नेताओं, सत्याग्रहीयों और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के शिक्षणार्थ अपनी देह पर महर्षि दधीचि का चित्र विराजमान कर, महर्षि के प्रति भक्ति और सम्मान उपस्थित किया था। महात्मा गाँधी ने कहा, ''महर्षि दधीचि के त्याग का सच्चा अनुकरण यदि हम कर सकें तो हिन्दु धर्म और भारत वर्ष की रक्षा करने की योग्यता हम सब में आ सकती है।

अर्थवापुत्र महर्षि दधिचि ने सर्वप्रथम मनुष्यों को अग्नि प्रज्वलित करने के विधी सिखाई थी। भारत सरकार के एक विभाग द्वारा महर्षि दधीचि के सन्मान में एक टिकट प्रकाशित किया था।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटलबिहारी वाजपेयी, महर्षि दधीचि के बारे में अपार आदर रखते हैं। उनका यह विश्वास है कि दधीचि के भाँती त्याग ही भारत का नव निर्माण कर सकता है, उन्होंने महर्षि दधीचि का संदर्भ देकर कई कविताओं की रचना भी की है उसमें एक मशहूर कविता है, ''आओ फिर से दिया जलायें''

ऐसे महान तपस्वी, महादानी, महात्यागी महर्षि दधीचि को मेरा शत्-शत् प्रणाम। महर्षि का महान त्याग और दान हमें शताब्दियों तक प्रेरणा देता रहेगा क्योंकि हम कितने भी आगे बढ़ जायें परन्तु हमें यह नहीं भुलना चाहिए कि हम भी उसी भारत के हैं जिस भारत में महर्षि दधीचि हुए, हमें केवल स्वार्थ में अंधा ना होकर दुसरों के कल्याण के बारे में भी सोचना चाहिए और यथा शक्ति दान-पुण्य करना चाहिए, वैसे भी आदमी अकेला आया है और अकेला जायेगा, परन्तु यह दान की पोटली परलोक यात्रा में भी काम आयेगी। धन्य है महर्षि दधीचि...

- अनुपमा शर्मा (दाधीच)
कार्यकारी सम्पादक

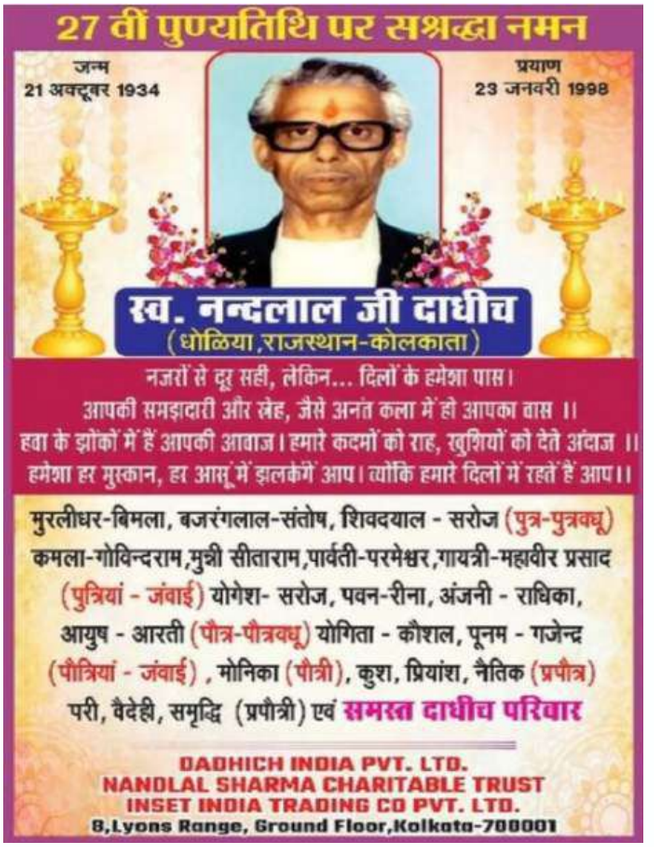

गौरी शंकर राठी बने अध्यक्ष
माहेश्वरी सभा की नई कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

समरसता, सेवा और नेतृत्व का संदेश देता रहा, चैन्नई का ऐतिहासिक शपथ समारोह डी. जी. वैष्णव कॉलेज में हुआ भव्य समारोह, समाजजनों व गणमान्य अतिथियों की रही विशेष उपस्थिति, नव-निर्वाचित कार्यकारिणी ने लिया सेवा और समर्पण और नवाचार का संकल्प

चैन्नई: श्री माहेश्वरी सभा, चेन्नई की वर्ष २०२५-२०२७ की नई कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह स्थानीय डी. जी. वैष्णव कॉलेज, अरुम्बक्कम में अत्यंत सौहार्दपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ पारंपरिक दीप प्रज्वलन एवं 'महेश वंदना' से हुआ, जिसने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ऊर्जा से भर दिया। सभा के निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. अशोक जे. मूंधड़ा ने स्वागत भाषण में बीते चार वर्षो की उपलब्धियों की जानकारी दी और सभी पदाधिकारियों, सदस्यों एवं समाजबंधुओं का आभार प्रकट किया, उन्होंने विश्वास जताया कि नव-निर्वाचित अध्यक्ष गौरी शंकर राठी के नेतृत्व में सभा नई ऊंचाइयों को छुएगी, और उन्होंने अपना

सहयोग का आश्वासन भी दिया।

मुख्य अतिथि एवं अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के पूर्व अध्यक्ष, श्याम सुंदर सोनी ने सभा के नए अध्यक्ष गौरी शंकर राठी को पद की शपथ दिलाई एवं तिलक, साफा, मोमेंटो देकर सम्मान किया। उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष, सह सचिव सहित पूरी कार्यकारिणी ने अध्यक्ष गौरी शंकर राठी से शपथ ग्रहण की। श्री गौरी शंकर राठी के जीवन यात्रा पर एक विशेष विडियो प्रस्तुति के माध्यम से उनके सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यवसायिक योगदान को भावपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया गया।

नव-निर्वाचित कार्यकारिणी में शामिल प्रमुख पदाधिकारी उपाध्यक्ष कमल गोयदानी एवं हरिकिशन मूंधड़ा, सचिव संजय मूंधड़ा, सह सचिव जगदीश गोदानी, कोषाध्यक्ष अनुराग माहेश्वरी अन्य कार्यकारिणी सदस्यों में अशोक गोयदानी, देवकिशन काबरा, हरिरतन राठी, जुगल किशोर बिसानी, कमलकिशोर भैया, किशनलाल झवर, मदन मोहन राठी, मनोज कुमार राठी, मुकुल डागा, निर्मल धीरन, पवन मोहता, प्रदीप माहेश्वरी, रविन्द्र डागा, सुरेश कोठारी, अशोक लखोटिया, जयप्रकाश मालपानी, मोहनलाल बजाज एवं श्रीमोहन दमानी आदि शामिल हैं।

विशेष कार्यकारिणी के रूप में अमित माहेश्वरी, चंद्रकुमार टावरी, दिवेश राठी, ग्वालदास मोहता, डूंगरदास बिसानी, जगदीश बियानी, महेंद्र बिहानी, मनमोहन बागड़ी, ओमप्रकाश घुरका, रितेश लखोटिया, श्याम सुंदर भूतड़ा, सुरेश भट्टड़ एवं विनोद द्वारकानी को भी शपथ दिलाई गई।

तमिलनाडु-केरल-पांडिचेरी प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष प्रमोद मालपानी ने नई टीम को बधाई देते हुए कहा कि संगठनात्मक कार्यों को समन्वय एवं सौहार्द के साथ किया जाएगा।

गौरी शंकर राठी ने अपने प्रथम अध्यक्षीय भाषण में कहा कि 'यह मेरे लिए अत्यंत गर्व और सौभाग्य की बात है कि मुझे 'चैन्नई' जैसी सांस्कृतिक नगरी में 'श्री माहेश्वरी सभा' का नेतृत्व करने का अवसर मिला है, यह दायित्व केवल पद नहीं, बल्कि समाज सेवा का माध्यम है, मैं इस मंच का उपयोग सिर्फ आयोजनों तक सीमित नहीं रखूंगा, बल्कि समाज के युवाओं, महिलाओं, वरिष्ठजनों और जरूरतमंदों के लिए ठोस योजनाओं पर कार्य करूंगा। हमारी प्राथमिकता रहेगी, शिक्षा के क्षेत्र में स्कॉलरशिप योजनाएं, स्वास्थ्य जागरूकता शिविर, युवाओं के लिए करियर मार्गदर्शन, महिलाओं के लिए स्वरोजगार कार्यशालाएं तथा वरिष्ठ नागरिकों के लिए सेवा-संवर्धन योजनाएं, हम नई तकनीक और युवा सोच को परंपरागत मूल्यों के साथ जोड़कर समाज को आगे ले जाएंगे, सभी गणमान्य सदस्यों से अनुरोध है कि वे हमें मार्गदर्शन दें, सुझाव दें और निरंतर सहयोग करते रहें।

मुख्य अतिथि व पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्याम सुंदर सोनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संगठन में नेतृत्व का निर्विरोध चुना जाना अत्यंत शुभ संकेत होता है, इससे संगठन को एकजुटता एवं दिशा मिलती है, उन्होंने गौरी शंकर राठी एवं उनकी टीम को शुभकामनाएं देते हुए समाज की प्रगति की अपेक्षा जताई।

कार्यक्रम का संचालन अक्षिता मूंधड़ा ने अत्यंत संयोजित ढंग से किया। धन्यवाद ज्ञापन सभा के नव-नियुक्त सचिव संजय मूंधड़ा ने किया। खान-पान की उत्तम व्यवस्था कमल गोयदानी एवं उनकी टीम ने संभाली, जिसकी सभी ने सराहना भी की। चैन्नई के विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि एवं गणमान्य अतिथियों ने सहभागिता की, प्रमुख उपस्थित अतिथियों में राजस्थान एसोसिएशन प्रेसिडेंट इलेक्ट अजीत चोरडीया, राजस्थान एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्षों में कैलाशमल दुगड, सुभाष रांका, प्रवीण टाटिया, एम जी बोहरा, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष विजय गोयल, मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष अशोक केडिया, कल्याण सिंह मोहता, नवल राठी, सत्यनारायण भूतड़ा, सलेम माहेश्वरी सभा के माननीय पदाधिकारीगण, श्री बंसीधर सारडा, श्री के. के. माहेश्वरी, सुधीर मूंदड़ा, महेंद्र मोहता, कमल फलोर, महावीर मर्दा, आदि गणमान्य प्रमुख रुप से उपस्थित थे।

-संजय मूंधड़ा चैन्नई

महर्षि दधीचि जन्मोत्सव पर
सिखलाये परहित का आदर्श परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष
जन्म पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

त्याग मूर्ति महर्षि दधिची

रमेश आसोपा
भ्रमणध्वनि : 93903 12181
अध्यक्ष :- दाधीच सेवा समिती
ईन्दूर (निजामाबाद) तेलंगाना, भारत

महर्षि दधीचि जन्मोत्सव पर
सिखलाये परहित का आदर्श परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष
जन्म पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Anand Dayama
Mob: 98222 67392
NetInk Soluutions
COMPUTER SALES AND SERVICES,
CCTV CAMERA SALES & SERVICES, TIME ATTENDENCE,
Flat No 2, Shrikrishna Apartment, Anand Nagar,
Sinhagad Road, Pune, Maharashtra, Bharat - 411051
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

झारखण्ड के बिरसा मुण्डा की धरती पर माहेश्वरी महासभा के पदाधिकारीयों एवं पूर्वांचल प्रातों के पदाधिकारीयों का स्वागत

पूर्वांचल समागम 2025
5-6 जुलाई 2025
सहयोग • संतुलन • समाधान
श्री माहेश्वरी सभा, रांची

आदरणीय समाज के ज्येष्ठतम एवं श्रेष्ठतम बन्धुओं आप सभी का पुर्वांचल समागम २०२५ में स्वागत है, हमारे राष्ट्रीय पदाधिकारी महामंत्री अजय काबरा, अर्थमंत्री राजकुमार काल्या, निवर्तमान सभापति श्याम सोनी, उपाध्यक्ष कैलाश काबरा एवं आज के मुख्य अतिथि कमल गांधी आदि का तहे दिल से स्वागत करते हैं।

पुर्वाचल के, सभी प्रदेशों के अध्यक्ष सचिव एवं सभी पदाधिकारियों का भी स्वागत है, विनोद जाजू, सम्पत मानधना, निर्मल कुमार लड्ढा, रविन्द्र डांगा, बासु दमाणी, राजकुमार सोमानी एवं ब्रजमोहन बाहेती, महेश कुमार माहेश्वरी, सुशील राठी, सुनील कोठारी एव झारखंड व बिहार प्रदेश के राजकुमार मारू एवं सचिव महेश लखोटिया ने समाज व देश के लिए के पत्थर की तरह का काम किया, इनकी देखरेख में रांची माहेश्वरी सभा के द्वारा यह जिम्मेदारी अशोक साबू एवं सभा अध्यक्ष किसन कुमार साबू एवं सचिव नरेन्द्र लखोटीया एवं सभी कार्यकर्ताओं की टीम ने बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया, इन सभी का तहेदिल से बहुत स्वागत है। अखिल व भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के सभी कार्यसमिति सदस्य एवं विभिन्न प्रकोष्ठों के पदाधिकारी एवं सभी कार्यकारी मंडल के सदस्यों का स्वागत है। रामानंद धूत झारखंड व बिहार प्रदेश माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के सभी पदाधिकारी एवं ट्रस्टी का भी स्वागत है। समागम में हमलोगों ने सेवा त्याग एवं सदाचार को एक नये रूप में परिभाषित किया है, सहयोग-सन्तुलन-समाधान, जिससे आज समाज की एक ज्वलंत समस्या की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं कि परिवार एवं समाज अंतरजातीय विवाह एवं उसके परिणाम से घटती हुई जनसंख्या को हम किस तरह सामना करें, विचारणीय विषय है।

विवाह और जीवनसाथी का चयन एक ऐसा ही विषय है, जिसमें धर्म, जातीयता, भौगोलिक स्थिति एवं सुंदरता के ईद-गिर्द सब चीजें घुमती हैं, कुछ वर्षों पहले तक जीवन साथी का चयन परिवार के अनुभवी बुजुर्ग ही करते रहे थे, लेकिन जैसे ही संयुक्त परिवार से एकल परिवार में परिणीत हुए एवं बच्चों की उच्च शिक्षा एवं नौकरी करने की प्रवृति ने जीवन साथी का चयन भी बच्चों के हाथ में जा पहुंचा।

अंतरजातीय विवाह, आज परिवार एवं समाज के गम्भीर चुनौती के रूप में सामने आया है, अगर हम इसका सर्वमान्य समाधान नहीं निकाल पाते हैं, तो माहेश्वरी समाज का अस्तित्व विलुप्त होने में सदियां नहीं लगेगी। माहेश्वरी यानी हमारे संस्कार, रस्म-रीति-रिवाज-परंपराएं, धार्मिक प्रवृति, दानशीलता, व्यापार कौशल, प्रतिभा, योग्यता विरासत में प्राप्त हमारे ये गुण ही नहीं रहे तो हम माहेश्वरी कैसे कहला सकते हैं? हमारे इन गुणों का, योग्यताओं का, संस्कारों का माहेश्वरी समाज की विलुप्तता का कारण होगा, हमें इन्हें बचाना होगा, सहेज कर रखना होगा, इन्हीं के साथ आगे बढ़ना होगा।

- छीतरमल धूत
संयुक्त मंत्री
पूर्वाचल माहेश्वरी महासभा

हर भारतीय अग्रसेन जी के सिध्दांतों को अपनाए - सुशील चौधरी

कोलकाता: १० अगस्त, रविवार को महानगर के होटल हिंदुस्तान इंटरनेशनल में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की एक विशेष बैठक हुई, जिसमें पितृ भूमि अग्रोहा, अग्रवाल समाज और अग्रवाल समाज की कुलदेवी लक्ष्मी के मंदिर निर्माण की प्रगति पर विचार-विमर्श हुआ।

बैठक में काफी संख्या में अग्रवाल बंधु उपस्थित थे। अग्रवाल समाज के उद्योग जगत से जुड़े लोग, बंगाल के आसपास के क्षेत्रों के लोग इसमें शामिल हुए, पुरुलिया और सिलीगुड़ी से भी लोग आए थे, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल शरण गर्ग, उन्हें सुभाष मुरारका, सुशील चौधरी के अलावा समाज के कई विशिष्ट लोगों ने बुके और दुपट्टा देकर सम्मानित किया। उद्योगपति ओम जालान को गोपाल शरण गर्ग ने माला पहनकर सम्मानित किया, इस मौके पर संजय गोयनका और गिरधारी लाल गोयनका ने भी गोपाल शरण गर्ग जी को बुके दिया, इस मौके पर समाज के कुछ प्रतिष्ठित लोगों ने भी मंच से अपने-अपने विचार रखे, जिनमें सत्यनारायण देवरालिया, महेंद्र अग्रवाल, प्रेसिडेंट एकल विद्यालय कोलकाता शाखा, माधवी अग्रवाल, संदीप गर्ग, प्रज्ञा झुनझुनवाला प्रमुख थे। बैठक में पितृ भूमि अग्रोहा के गौरवमयी इतिहास व अग्रवालों के जीवन में इसके महत्त्व पर गंभीर चर्चा हुई, इसके साथ वक्ताओं ने महाराजा अग्रसेन जी के प्रेरणादायक सिद्धान्तों को अपनाने पर जोर दिया। कोलकाता में अग्रवाल सम्मेलन के कार्यो के विस्तार पर चर्चा हुई और कहा गया कि ये कार्य पर्याप्त नहीं हैं, अग्रोहा शक्तिपीठ में निर्माणाधीन कुलदेवी आद्य महालक्ष्मी मंदिर के कार्य की प्रगति की चर्चा भी हुई।

बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल शरण गर्ग ने अपने संबोधन में कहा कि हर अग्रवाल की रगों में धर्म के प्रति आस्था होती है, उन्होंने बताया कि हमारे पुरुखों को धर्म के अनुराग का यह आशीर्वाद ५१६३ साल पहले मिला था, उन्होंने पूछा, ५० साल पहले लोग कितने खाटू श्याम धाम जाते थे? जब आलू सिंह, लक्खा जी जैसे लोगों ने कोलकाता में आकर खाटू जी के गीत गाये, तो लोगों को उनके प्रति भक्ति बढ़ी, उन्होंने बताया कि १९७५ में 'अग्रवाल समाज' की स्थापना हुई, उन्होंने कहा कि आज हर राज्य में अग्रवाल सम्मेलन की शाखाएं खुल गयी हैं, उन्होंने अपील की कि अगर हम अपने बेटे-बेटियों की शादियां करें, तो पहला शगुन अग्रसेन जी के नाम से करें, अगर गरीबों को भोजन करायेंगे, तो ज्यादा पुण्य मिलेगा, उन्होंने सुझाव दिया कि अग्रवाल बंधु दिवाली पर चांदी की लक्ष्मी की मूर्ति बनवायें और इस दिन अग्रसेन भगवान की पूजा भी करें, उन्होंने अग्रसेन जयंती के काफी प्रचार-प्रसार पर जोर दिया, उन्होंने कहा कि समाज में एक धारणा है कि अग्रसेन भगवान की पूजा केवल अग्रवाल ही करेंगे, उन्होंने पूछा कि भगवान कृष्ण यदुवंशी थे, तो क्या केवल यादव समाज के लोग ही उनकी पूजा करते हैं? भगवान तो भगवान होता है, उनका दर हर गरीब-अमीर के खुला होना चाहिए, अग्रसेन जी कलयुग के अवतार हैं, उन्होंने अग्रवाल समाज से केवल स्वार्थ की बात करने की आदत छोड़ने को कहा।

महाराजा अग्रसेन धाम अध्यक्ष व विशिष्ट उद्योगपति ओम जालान ने कहा कि गोपाल शरण जी का जोशीला भाषण सुनकर बहुत आनंद आया, उन्होंने कहा कि इनके पदचिह्नों पर चलकर ही हम समाज का और भला कर सकते हैं और निचले तबके को ऊपर ला सकते हैं।

धन्यवाद ज्ञापन अंतराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के अध्यक्ष सुशील चौधरी ने किया, श्री हरि सत्संग समिति के उपाध्यक्ष सुभाष मुरारका ने अग्रवाल धाम जाने की इच्छा व्यक्त करने वाले संजय गोयनका के बारे में बताया कि वह वहां जाकर कितना खुश हुआ।

कार्यक्रम में अखिल भारतीय अग्रवाल समाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरोज अग्रवाल, सुरेश बंसल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, वनबंधु परिषद के अध्यक्ष महेन्द्र अग्रवाल, साल्टलेक सांस्कृतिक संसद के अध्यक्ष संजय अग्रवाल, अग्रसेन समिति भवन के सह सचिव सीताराम जालान हिंदुस्तान क्लब के उपाध्यक्ष संजय गोयनका, विश्व जागृति मिशन के ट्रस्टी डी.एन. गुप्ता, अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के अध्यक्ष सुशील चौधरी, विमल बेंगानी, सुरेश कुमार अग्रवाल, मदन गोपाल अग्रवाल, संदीप गर्ग, सुधांशु शेखर, इंदरचंद बजाज, राजेंद्र प्रसाद सुरेका, श्रीमती माधवी अग्रवाल, अरुण गोयल, गोविंद पंसारी, प्रदीप संघई, दीन दयाल ढांढनिया, प्रदीप दारूका, आदि-आदि ने समारोह में शिरकत की।

'दधीचि जयंती' सिखलाये
परहित का आदर्श,
परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष
महर्षि दधीचि जन्म पर्व पर
शुभकामनाएं

हरिप्रसाद दाधिच
मो. ९९८६१६७५९६

आंनद दाधिच
मो. ९६८६६८३६७७

महर्षि दधीची सेवा समिति (रजि.)

सेवा ही हमारा धर्म है

सेवाकार्य

- समाज सेवा/जनहित/गौ-सेवा
- सहयोग, शिक्षा, खेलकूद, बिमारी, प्रशिक्षण, विवाह आदि निशक्तजन।
- सनातन व सांस्कृतिक आयोजन।
- महान पुरूषों के जन्मोत्सव आयोजन।

जाट छात्रावास के पास, नोखा रोड पो.
साण्डवा ३३१५१७, तह. बीदासर जिला-चूरू (राज.)

महर्षि दधीचि जन्मोत्सव पर
सिखलाये परहित का आदर्श परोपकार ही है जीवन
का उत्कर्ष
जन्म पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

AAKRUTI

Avinash Dahima
भ्रमणध्वनि : 09821455090

Ashok Agarwal
भ्रमणध्वनि : 09821231190

AAKRUTI CREATIVE SOLUTIONS PVT. LTD.

For All Your Advertising Needs

206, Kilfire House, C-17, Dalia Indl. Area, Near Fun Republic,
Off New Link Road, Andheri West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400053
अणुडाक : amazingaakruti@gmail.com
अंतरताना : www.aakruticreative.com

'दधीचि जयंती' सिखलाये परहित का आदर्श,
परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष
महर्षि दधीचि जन्म पर्व पर शुभकामनाएं

Devendra Shastri
भ्रमणध्वनि: 98245 07494

D Shastri C/1204, SHYAM SAANVI
BEHIND SATYAMEV HOSPITAL NEAR AD HOSPITAL
CHANDKHEDA, AHMEDABAD, BHARAT- 382424

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

दधीचि - हमारी पहचान

हमारे पोषक दधीचि हुए प्रथम देहदानी,
फिर हमें अपनी ही क्षमता क्यों छुपानी?
अब यह बात हमें पूरे जहाँ में है पहुंचानी,
बढे कदम और सुने, एक दूजे की जुबानी।
मृत को सांसें देने वाले दधीचि वैद्य प्रथम,
फिर क्यों हो हमारी अभिलाषाएं कम,
अनुपम बनने का सपना ना पड़े नरम,
बढ़े कदम और तोड़े भ्रमजाल का गम।
हम देव विष्णु को हराने वाले की संतान,
हम पर दधीचि बहना दधिमती का वरदान,
फिर क्यों रहे हम एक दूजे से अनजान,
बढे कदम और बने एक दूजे की पहचान।
अब पूर्वजो और दाधीच युवाओं से आस,
गुमनामी भगा नभ छूने का करो साहस,
अपने चंचल मन का सूक्ष्म न हो प्रयास,
बढ़े कदम और दोहराएँ दधीचि का इतिहास।

- आनंद दाधीच, बेंगलुरु, भारत।

'दधीचि स्तुति' जयन्ती महोत्सव पर

देकर दधीचि नाम शुभ, देव किया सत्कार।।
गगन वाद्य बहु विधि बजे, सुर बरसाये फूल।
जन्मे ऋषि नंदन, मुनि मन रंजन, ऋषि कुल भाग्य विधाता।
हर्षित हिय माता, निरखे ताता, कुल नंदन मृदु गाता।
पितु मुदितअथर्वा, ध्याये देवा, कर कुल पितरन पूजा।
ऋषि नाम विचारे, मंत्र उचारे, दधीचि सम नहिं दूजा।
शुभ वाद्य बजाये, द्वार सजाये, सखियन मंगल गाई।
निरखे शिशु आनन, शोभित आँगन,मुनि घर बँटी बधाई।
तुम तप व्रत धारी, सृष्टि सँवारी, शंभु भक्त अवतारा।
बल बुद्धि विशाला, दीन दयाला, कृपा सिंधु सुख सारा।
जग संकट छाया, असुरन माया, वृत्रासुर भय कारी।
आतंक विनाशन, भव भय तारन,नहीं कोई वधकारी।
याचक बन आये, विष्णु पठाये, इन्द्र लिये सुर साथा।
सब विपद सुनाई, करहु सहाई, तुम समर्थ ऋषि नाथा।
सुनिये सब देवा, परहित सेवा, क्षण भंगुर तन जानी।
कह ध्यान लगाया, दीन्ही काया, अस्थि दान वर दानी।
दधीचि कुल दाता, ऋषि विख्याता, जन्म महोत्सव आया।
पूजन कर ध्यायें, दर्शन पायें, रखें कृपा वर छाया।
संसृति सुख दायक, जन मन नायक, हम हैं शरण तुम्हारी।
मंगल यश गाये और सुनाएँ हम दाधीच भारतीय

- पुष्पाशर्मा 'कुसुम' अजमेर

वैदिक ऋषि अथर्व के पुत्र त्यागमूर्ति महर्षि दधीचि!

भारत की पवित्र - पावन पुण्य भूमि, जो ऋषियों महर्षियों की भूमि कहलाती है - जहाँ तीर्थंकर महावीर, रामकृष्ण, गौतमबुद्ध आदि ने अवतरित होकर भारत भू का भार उतारा (मिटाया) और अपने पावन चरणों से 'भारत' भू को पवित्र किया, जिस भूमि पर पवित्र गंगा-यमुना, गोदावरी एवम् सरस्वती की धारा बह कर पुण्य बढ़ाती है, उस 'भारत' भूमि पर देवता लोग (देवगण) भी आने को तरसते हैं। 'भारत' भूमि के लिए किसी ने सत्य ही कहा है -

"आतो सगला न शरमावे, ई पर देव रमण न आवे,
इनरो यश नर-नारी गावे, आ धरती आपा सगलां री..."

ऐसी पावन भूमि पर महात्यागी, महाज्ञानी, परोपकारी, धर्मनिष्ठ, तपोमुर्ति प्रात: स्मरणीय महर्षि दधीचि ने सतयुग में जन्म लिया था।

द्वापर युग की बात है - राजा जनमेजय भगवान वेद व्यासजी से पूछते हैं- महर्षि दधीचि कौन थे, वे किसके पुत्र थे, इनकी माता कौन थी और भगवती दधिमथी उनकी रक्षा करने वाली कौन थी?

व्यासजी बोले - हे राजन! तुमने बड़ा ही सुंदर प्रश्न पूछा? जो बड़ा ही रोचक है। ध्यान पूर्वक तुम श्रवण करो, यह प्रश्न पर्वतराय हिमालय ने अपने गुरु तपोमुर्ति वशिष्ठजी से पूछा और वशिष्ठजी का संवाद पार्वती ने भगवान शिव से किया, कथा इस प्रकार है :

हिमालय ने वशिष्ठजी से कहा, कृपा करके मुझे महर्षि दधीचि के उत्तम चरित्र को कहो।

वशिष्ठजी ने हिमालय से कहा - हे शैलराज! संसार के आदि समय (सृष्टि की रचना के पहले) अनन्तासन पर श्री हरि सो रहे थे, उनके मन में विकार आने पर, उनके नाभिकमल से ब्रह्माजी उत्पन्न हुए। ब्रह्माजी ने तपोबल से अपने विभिन्न अंगों से दौहिक (मानस) दस पुत्र उत्पन्न किये। ब्रह्माजी के हृदय से भृगु और अथर्वा उत्पन्न हुए, बाकि इस प्रकार हैं-

महर्षि दधीचि ने साहसपूर्ण एवम् निडरता से दक्ष प्रजापति के अन्याय के प्रति विरोध प्रगट किया। दधीचि ने अपने क्रांतिकारी स्वरुप का परिचय देते हुए कठोर शब्दों में दक्ष के इस अन्याय पूर्ण कृत्य एवम् दुराग्रह की भर्त्सना की।

दधीचि बोले दक्ष! शिव के बिना यह महायज्ञ अयज्ञ हो गया है, अब यह यज्ञ कहलाने योग्य ही नहीं रहा, विशेषत: इस यज्ञ में तुम्हारा विनाश हो जायेगा, ऐसा कहकर दक्ष की यज्ञशाला से दधीचि अकेले ही निकल पड़े। अन्याय के प्रति साहसपूर्ण विरोध कर 'महर्षि दधीचि' ने संसार में एक आदर्श प्रस्तुत किया, इसके बाद भगवती सती ने आत्मदाह किया और यज्ञ का विध्वंश हुआ।

मरिचि, अत्रि, अंगीरा, चुलहस्त, पुलह, कृतु, वशिष्ठ और नारद, ये सब ब्रह्माजी के मानस पुत्र थे, अथर्वा महान तेजस्वी और विष्णु के परम भक्त थे, उन्होंने वेद की व्याख्या की, वे अथर्व वेद के प्रणेता माने जाते हैं, उनका विवाह ब्रह्माजी की आज्ञा से कर्दम ऋषि की विदुषी पुत्री शान्ता से हुआ। महर्षि अथर्वा अपनी पत्नी शान्ता के साथ धर्मशास्त्र के अनुकुल पवित्र व्रत सन्ध्या और अग्नि होत्रादि को रमण करते हुए पत्नी के साथ बहुत समय बिताया, फिर भी वंश वृद्ध के लिये पुत्र प्राप्त नहीं हुआ। पुत्र की इच्छा रखनेवाले अथर्वा मुनि बार-बार चिन्ता करते थे, बिना संतती (पुत्र) के मृत्युलोक में जीवन व्यर्थ और धिक्कार है।

देवऋृषि नारदजी का आगमन: -

एक रोज देवऋृषि नारदजी भ्रमण करते हुए अथर्वा मुनि के आश्रम में आये, उस रमणीय आश्रम को देखकर नारदजी का मन प्रेम में **शेष पृष्ठ १४ पर...**

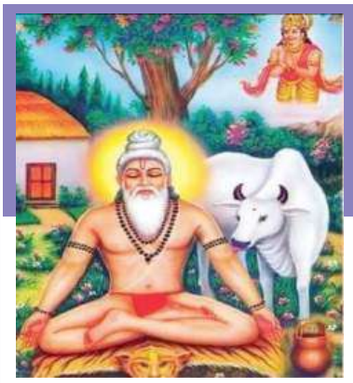

परहित हेतु किया त्याग
तभी महर्षि दधीचि का है अमर इतिहास
महर्षि दधीचि जन्मोत्सव पर सादर-वंदन!

JETHMAL DADHICH
Mob : 9422321241/ 9850791777

Pawan Dadhich
Mob : 9172792712

DADHICH & COMPANY

Basmati Rice Specialist

CANVASSING AGENTS & ORDER SUPPLIERS SPECIALIST IN BASMATI RICE

117, MAHALAXMI MARKET, 1st FLOR, E-40 MARKET YARD, GULTEKDI, PUNE, MAHARASHTRA, BHARAT- 411 037

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

महर्षि दधीचि जन्मोत्सव पर
सिखलाये परहित का आदर्श
परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष
जन्म पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

जगदीश चंद्र जोशी
समाजसेवी
दाधीच समाज उदयपुर

कार्यालय एवम् निवास
R1/11 जयश्री कॉलोनी बोहरा गणेश जी,
उदयपुर, राजस्थान, भारत- ३१३००१
Mob: 9414156892

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

महर्षि दधीचि जन्मोत्सव पर
सिखलाये परहित का आदर्श
परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष
जन्म पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Bal Mukund Sharma
Mob: 9431126751

Dadheechi Foods Pvt. Ltd.,

5, Tatisliwai Industrial Area Phase-1,
Ranchi, Jharkhand, Bharat- 835103

Resi: Dadheechi Niwas Gujrat Colony,
Chas, Bokaro, Jharkhand, Bharat- 827013

पृष्ठ १२ से... डुब गया। महामुनि अथर्वा देवऋषि नारदजी को आते देख कर सपत्नीक प्रणाम किया और अर्चना आदि श्रद्धा पूर्वक करके उन्हें आसन दिया, जब नारदजी ने अथर्वा मुनि को उदासीन और चिन्तित देखा तो उन्होंने पूछा- हे मुनि श्रेष्ठ! तुम व्याकुल और पीड़ित दिख रहे हो, मुझे कहो क्या बात है? अथर्वा मुनि बोले- हे प्रभु! आप तप और योग के प्रभाव से क्या नहीं जानते, मेरे आश्रम में कुबेर के समान सुख उपस्थित है, किन्तु नि:सन्तान के मन में प्रसन्नता कैसे हो सकती है? सन्तान हिनता के महान दु:ख से हम दोनों (दम्पत्ती) इस महान चिन्ता से दु:खित है, हमने संतान प्राप्ती के लिए सभी उपाय किये, संतान देने वाले व्रत को किया। पुत्रेष्ठी यज्ञ और विष्णु यज्ञ किया, सभी प्रकार के दान दिये, फिर भी मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ, मैंने जम्बू द्विप के सभी तीर्थ और भारत की सभी पवित्र नदियों में सपत्नीक स्नानादिक दान धर्म इत्यादि किया फिर भी मुझे सन्तती सुख नहीं मिला।

श्री दधीचि वंश उत्पति

मेरे दिये हुए (स्वाहा और स्वधा) देवता और पितरों को स्वीकार नहीं। कल्याण की इच्छा रखने वाले सबेरे उठकर मेरा मुँह नहीं देखना चाहते, इस प्रकार मैं हमेशा अपमानित होता हूँ, पुत्र के बिना मैं देवर्षियों तथा पितरों का ऋणी हो गया हूँ। हे अखिला पापहर्ता! हे करुणावतार प्रभु! मेरी रक्षा करो।

नारद जी बोले - हे मुनिश्रेष्ठ तुम ब्रह्म ज्ञाता हो। कल्याणकारी कार्यों के प्रभाव से शिघ्र सभी मनोरथों को पाकर सुख पावोगे। हे विप्र! मैंने ब्रह्माजी से सुना हुआ अत्यन्त प्रसिद्ध महामाया आदिशक्ति दधिमथी का पुण्य बढ़ाने वाला रहस्यमय नवरात्रि व्रत बतलाता हूँ, उसे पुत्रार्थी शास्त्र विधान के अनुसार करें। दधिमथी देवी की नवरात्र में कही हुई विधि से पूजन करने पर शीघ्र ही सब मनोरथ सिद्ध होते हैं, तुम उसे सपत्नीक करो। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पवित्र तिथि प्रतिपदा से आरम्भ करके, नौ दिन तक व्रत करें। काम, क्रोध, मद, मोह को त्याग कर एकचित्त होकर, पवित्र मन से भगवती दधिमथी का ध्यान करें। मूल मंत्र से घी मिली हुई खीर की अग्नि में आहुति दें। अवशिष्ठ हवन की समाप्ति के बाद ब्राह्मणों के साथ स्वयं भोजन करें, ऐसा करने से सम्पूर्ण तुम्हारी कामनायें पूर्ण होगी।

नवरात्रि व्रत की महिमा :-

वशिष्ठजी पर्वतराज हिमालय से कहते हैं कि पुत्र इच्छा रखनेवाले अथर्वा दम्पत्ति ने भक्तिभाव से नारदजी के द्वारा कही हुई विधि-विधान से व्रत को किया और उस व्रत के प्रभाव से आश्विन शुक्ल की पुण्य तिथि महाष्टमी के दिन, मध्याह्न के समय, शुक्रवार को हजारों बिजलियों के समान देदीव्यमान भगवती श्यामा प्रगट हुई, उसके दर्शन मात्र से अथर्वा दम्पत्ती धन्य हो गये, अथर्वा मुनि हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए बोले - हे देवी माँ! तुम सत, रज और तम गुणों से विश्व का सदा पालन करती हो एवम् तुम अपने व्यक्त और अव्यक्त प्रभाव से विश्व की रचना तथा संहार करनेवाली हो। ब्रह्मा-विष्णु-महेश तथा तपस्वी ऋषि लोग भी तुम्हें जान नहीं पाते, हे भक्तों को वर देने वाली महादेवी! तुम प्रसन्न हो। मैं बार-बार महाशक्ति शारदा को नमस्कार करता हूँ। देवी उनके नवरात्र व्रत से प्रसन्न होकर वर माँगने को बोली, अथर्वा हाथ जोड़कर नमस्कार करके बोले- हे माँ! मुझे विद्यावान, यशस्वी, सम्पूर्ण शास्त्रों को जानने वाला, दानी, शीलवान, सत्यव्रती तथा धर्मपरायण, दृढ़व्रती, कृतज्ञ तथा वंश वृद्धि करनेवाला, हमेशा तुम्हारी भक्ति में अनुरक्त रहनेवाला सुन्दर पुत्र का आशीर्वाद मुझे दो।

देवी बोली, हे अथर्वा! तुमने दुर्लभ वस्तु माँगी है फिर भी मैं तुम्हारी भक्ति से अत्यन्त प्रसन्न हूँ, इसलिए तुम्हें प्रसाद रुपी पुत्र देती हूँ कह कर अर्न्तध्यान हो गई।

अथर्वानन्दन महर्षि दधीचि का जन्म उत्सव :-

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को भगवती दधिमथी की कृपा से रात्रि बारह बजे, शुभ ग्रहों के उदयकाल में अथर्वाजी के तेज से महान तपस्वी दधीचि उत्पन्न हुए, उस समय सुख का अनुभव करनेवाली तथा सुख देनेवाली वायु चलने लगी। गंधर्व गाने लगे। देवताओं ने फूल बरसाये। देवगणों ने जय-जयकार का नाद किया। नगाड़े बजे, अप्सराओं ने नाच-गाना किया, उस समय ब्रह्माजी स्वयं सारे देवताओं के साथ अथर्वा के यहाँ आये और जन्म उत्सव मनाया। ब्रह्माजी प्रसन्न होकर अथर्वा से बोले- पुत्र (अथर्वा) सुन! तेरा यह धर्मात्मा बालक ईश्वर का अंश है। देवी का कृपा पात्र है। दयालू है। देवता तथा ब्राह्मणों के हित के लिए, मैंने इसके स्थूल शरीर में सार (शक्ती) रख दिया है, यह सम्पूर्ण दैत्यों और राक्षसों को मारने वाला होगा। यह दधि (ब्रह्म) की पूजा करने वाला होने से एवम् ब्रह्म को पहचानने वाला होने से, तेरे इस पुत्र का नाम दध्यड़ (दधीचि) होगा। यह वंश स्थिर करेगा, इसके बाद ब्रह्मादिक देवताओं ने 'दधीचि' को एक दिव्य यज्ञोपवीत धारण करवा कर कहा- तुम इसी समय तरुण हो जाओ। महान बुद्धिमान होकर वेद-वेदांग और ब्रह्मज्ञान में पारंगत हो जाओ, ब्रह्माजी ने ऋगवेद, यर्जुवेद और सामदेव की शिक्षा 'दधीचि' को देकर, देवताओं के साथ अपने धाम को लौट गये।

शास्त्रों में पारंगत हो जाने के बाद 'महर्षि दधीचि' **शेष पृष्ठ १५ पर...**

महर्षि दधीचि जन्मोत्सव पर
सिखलाये परहित का आदर्श परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष
जन्म पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

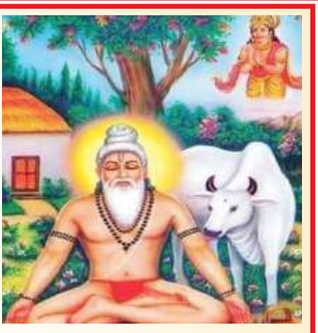

नवनीत क्लॉथ सेंटर
गोविंद क्लॉथ

शामसुंदर नारायणदास दायमा (डोबा)
नवनीत नारायणदास दायमा (डोबा)
नंदकिशोर नवनीत दायमा (डोबा)
गोवर्धन शामसुंदर दायमा (डोबा)
नटवर नवनीत दायमा (डोबा)
नंदगोविंद नंदकिशोर दायमा (सोलापूर)
भव्य नंदकिशोर दायमा (सोलापूर)
वल्लभ गोकुलदासजी डोबा (सोलापूर)

समस्त डोबा परिवार
७२९, फलटण गल्ली, सोलापूर, महाराष्ट्र, भारत- ४१३००२ मो: ९४२२४६०७९९

पृष्ठ १४ से... सरस्वती नदी के तट पर तप करने गये। कई वर्षों के बाद शिव की कठिन आराधना, उपासना और तपस्या करने के बाद, पार्वती के साथ शिव ने दर्शन दिये। आशुतोष ने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर कहा- हे ऋषि! मैं तेरे चित्त में हमेशा निवास करुँगा और तेरे मोह को हरुँगा और तुझे शाश्वत

दधीमती माता

ज्ञान दूँगा, मैं सदा तुम्हारा रक्षक बन कर रहूँगा, संसार की कोई भी शक्ति तुम्हें दबा नहीं सकेगी। तुम निर्भय हो कर मेरी आराधना करते रहो। मेरी आज्ञा से तृण बिन्दु राजा की सुकन्या वेदवती (सुर्वचा) से विवाह करो, मेरा आशीर्वाद है, इतना कह कर भगवान आशुतोष अन्तर्ध्यान हो गये।

'महर्षि दधीचि' के आश्रम पर तृण बिन्दु राजा आये और 'दधीचि' से याचना की कि उनकी कन्या वेदवती को स्वीकार करें। ऋषि ने भगवान शंकर की आज्ञा से अपनी मर्यादा समझ कर स्वीकृति दे दी, तब राजा ने अपनी प्यारी पुत्री को ऋषि के साथ वेदोक्त रीति से अर्पित कर दी। अब तो ऋषि दधीचि अपनी पत्नी वेदवती के साथ, अपने इष्टदेव शिवजी की आराधना करते हुए, त्रिवेणी संगम के पास अपने आश्रम (अथर्ववन) में निवास करने लगे। यह आश्रम पवन पावनी माता गंगा के तट पर अति रमणीय, जो मन को लुभाने वाला, आकर्षक, सुन्दर, शोभायमान, हरियाली और वृक्षों से सघन था, यहाँ फुलों की मधुर गंध से भौरों की टोलियाँ घूमती हुई, मधुर-मधुर रसपान करती रहती थी। फल-फुलों से लदे वृक्ष, वन की शोभा बढ़ा रहे थे। दधीचि की तपस्या के तेज के कारण राक्षस यहाँ प्रवेश नहीं कर पाते थे। भगवान विष्णु, रुद्र और ब्रह्मादिक देवता स्वयं दर्शनार्थ आया करते थे और ऋषि दधीचि को पृथ्वी का साक्षात कल्पवृक्ष मानते थे।

न्यासी सिद्धान्त के आविष्कारक महर्षि दधीचि:-

संसार में देव और असुरी वृत्तियों का संघर्ष आदिकाल से चला आ रहा है, एक बार देवताओं ने राक्षसों को परास्त कर विजयश्री प्राप्त कर ली और पुन: इस चिन्ता में पड़ गये कि अब इन दिव्यास्त्रों को कहाँ छुपाकर सुरक्षित रखा जाये, ताकि असुरों के हाथ न आये, अगर दिव्य अस्त्र असुरों के हाथ पड़ गये तो अनर्थ हो जायेगा और सम्पूर्ण संसार के लिए एक संकट पैदा हो जायेगा, अत: इन दिव्यास्त्रों की रक्षा बहुत जरुरी है। देवताओं के आग्रह पर ब्रह्मा, विष्णू और महेश एवम् देवगुरु ब्रहस्पति ने सहचिन्तन किया, इस पर दिव्यास्त्रों को सुरक्षित रखने के लिए सिर्फ एक ही नाम उभर कर सामने आया वह था महर्षि दधीचि। भगवान विष्णु की सलाह से सारे देवता लोग, त्रिदेवों को साथ लेकर, समस्त दिव्यास्त्रों सहित दधीचि के आश्रम पर आये और ऋषि को प्रणाम किया। सारे देवगण हाथ जोड़कर ऋषि से कहने लगे कि हे ऋषिराज! आपका तपोबल ऐसा है कि इस तपोवन भूमि में राक्षस प्रवेश ही नहीं कर पाते, अत: हमलोग इन दिव्यास्त्रों को सुरक्षित रखने के लिए आपको सौंपना चाहते हैं, **शेष पृष्ठ १६ पर...**

पृष्ठ १५ से... हमारी प्रार्थना स्वीकार करें। हमारा आप पर अटूट विश्वास है। यह दिव्यास्त्रों की धरोहर आपकी अभिरक्षा में ही सुरक्षित रह सकती है। अत: आप इसके न्यासी बनने की कृपा करें। दिव्यास्त्रों की आवश्यकता पड़ने पर हम स्वयं आकर इन्हें ले जायेंगे। 'दधीचि' की धर्मपत्नी वेदवती ने आपत्ति जताई और इन दिव्यास्त्रों को आश्रम में रखने का घोर विरोध किया (जताया) पर दधीचि ने अपने आश्रम पर आये हुए देवअतिथियों को सम्मान देने की भावना को ध्यान में रखकर, उन दिव्यास्त्रों को अपने आश्रम में रखवा लिया।

दधीचि द्वारा दिव्यास्त्रों का तेज पान :-
'महर्षि दधीचि' अपने आश्रम में यज्ञ, उपकर्म आदि कार्यों में सदा व्यस्त रहते हुए, उनके अभिरक्षण में रखे दिव्यास्त्रों का सदैव ध्यान रखते थे। कालान्तर में आसुरी शक्तियों का प्रभाव बढ़ने लगा, इससे 'दधीचि' की तपस्या पर और आश्रम की शान्ति में भी खलल पड़ने लगा। महर्षि ने अनेक बार देवराज इन्द्र से कहा कि वे उन्हें सौंपे गये आयुधों को ले जायें और उन्हें न्यासी के दायित्व से मुक्त करें, पर उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया गया, कई वर्ष बीत जाने पर भी देवता अपने दिव्यास्त्रों को लेने नहीं आये, ऋषि ने सोचा! देवता यहाँ रखे हुए अपनी धरोहर दिव्यास्त्रों को ले जाना नहीं चाहते, उन्हें इन दिव्यास्त्रों की जरुरत नहीं है, महर्षि आश्रम छोड़, कहीं नहीं जा सकते थे, उन्हें तो देवताओं के दिव्यास्त्रों का ध्यान रखना पड़ता था, हमेशा उन्हें चिन्ता लगी रहती थी कि उनकी गैर हाजिरी में दानवगण दिव्यास्त्रों को चुरा न लें।

न्यासी धर्म को ध्यान में रखकर, देवों की दिव्यास्त्र सम्पदा को सुरक्षित रखने के लिए, यंत्र-मंत्र-तंत्र के ज्ञाता महर्षि दधीचि ने रसायन मंत्र-तंत्र के माध्यम से शस्त्रों के तेज को गंगाजल में परिवर्तित कर, अपने आराध्य शिव का समुद्र मंथन से निकले हलाहल को कण्ठ में धारण करनेवाले स्वरुप का स्मरण किया और उसी की अनुसरण करते हुए अपने मेरूदंड की अस्थियों में धारण कर लिया। निर्मल पावन गंगा की तरह दधीचि ने अपने पवित्र जीवन को श्रेष्ठ न्यासी की तरह स्थापित किया।

महर्षि दधीचि का साहसी, निडर एवम् क्रांतिकारी स्वरुप:-
प्रजापतियों के प्रमुख पद पर आरुढ़ होने के बाद, दक्ष ने एक महान् यज्ञ कनखल तीर्थ में आयोजन किया। यज्ञ का आयोजन करने का, दक्ष का एक मात्र उद्देश्य था कि अपने जमाता भगवान शिव को नीचा दिखाना, वे भगवान शंकर द्वारा प्रयाग सत्र में प्रणाम न करने के कारण, अपना अपमान समझ कर शिव से द्वेष भाव रखने लगे। हीन भावना और प्रमुख प्रजापति पद पर नियुक्त होने के कारण एवम् अपने चाटुकारों से घिरे रहने के कारण, प्रजापति दक्ष अत्याधिक अहंकारी हो गये थे, इस कनखल तीर्थ के महायज्ञ में, दक्ष ने समस्त देवर्षियों, महर्षियों तथा देवताओं को बुलाया, वे सभी इस यज्ञ में पधारे। महर्षि अगस्त्य, कश्यप,

अत्रि, वामदेव, भृगु, दधीचि, भगवान व्यासजी, भारद्वाज, गौतम पैल, पराशर, गर्ग, भार्गव आदि दक्ष के यज्ञ में हर्षपूर्वक सम्मिलित हुए, इनके अतिरिक्त समस्त देवगण लोकपालगण सभी उपदेवता यज्ञ में पधारे। दक्ष की प्रार्थना पर सत्यलोक से ब्रह्माजी, बैकुण्ठलोक से भगवान विष्णु भी इस यज्ञ में सम्मिलित हुए।

दक्ष ने भृगु आदि तपोधनों को ऋत्विज बनाया। सम्पूर्ण मरूदगणों के साथ स्वयं भगवान विष्णु उनके अधिष्ठाता थे। ब्रह्माजी वेदयत्री की विधि को बताने वाले ब्रह्मा बने। यज्ञ में अट्ठासी हजार ऋत्विज एक साथ हवन करते थे। चौसठ हजार देवर्षि उद्गाता थे। नारद आदि देवर्षि और सप्तर्षि पृथक-पृथक कथा-गान कर रहे थे, दक्ष ने अपने महायज्ञ में गन्धर्वों, विद्याधरों, सिद्धों, बारह आदित्यों, उनके गणों तथा नागलोक के समस्त नागों को भी वरण किया, इतना सब करने पर भी, दुरात्मा दक्ष ने महायज्ञ में भगवान शम्भु को आमंत्रित नहीं किया। 'महर्षि दधचि' को जब ज्ञात हुआ कि उनके इष्ट देव देवाधिदेव महादेव, भगवान आशुतोष को दक्ष ने द्वेषवश आमंत्रित ही नहीं किया, तो वे बड़े चिंतित हुए, उनका चित्त अत्यन्त उद्विग्न हो उठा और वे उठकर मुख्य-मुख्य देवताओं और दक्ष को सम्बोन्धित करते हुए कहने लगे-मेरी बात **शेष पृष्ठ १७ पर...**

परहित हेतु किया त्याग
तभी महर्षि दधीचि का है अमर इतिहास
महर्षि दधीचि जयंती पर सादर-वंदन

R. K. VYAS
Chartered Accountant
भ्रमणध्वनि : 093310 32177

R K Vyas & Co.
Office : Commerce House, 2 Ganesh Chandra Avenue,
Room no 11, 8 th floor, Kolkatta, West Bengal, Bharat-700013
CD 73, Salt Lake, Sector 1,
Kolkatta, West Bengal, Bharat - 700064

पृष्ठ १६ से... ध्यान से सुनो!

भगवान शंकर की पूजा एवम् सान्निध्य के बिना कोई भी यज्ञ निर्विघ्न पूरा नहीं होता, यहाँ पर बड़े-बड़े मुनि और देवेश्वर पधारे हैं, फिर भी उन महात्मा पिनाकपाणि शंकर के बिना यह यज्ञ शोभा नहीं दे रहा है। मंगलमय भगवान शिव की कृपा दृष्टि से समस्त मंगल कार्य सम्पन्न होते हैं। भगवान शंकर के यहाँ पदार्पण करते ही यह यज्ञ पवित्र हो जायेगा, अन्यथा यह पूरा नहीं हो पायेगा। दधीचि के इस मंगलमय परामर्श से दक्ष क्रोधित होकर, शिव के प्रति अपशब्दों का प्रयोग किया, सारा यज्ञ मंडप अमंगल की आशंका से ओझल हो गया, यज्ञ मंडप में सभी उपस्थित देवगण, देवर्षि, प्रजापति दक्ष के भयवश उसके इस कृत्य का विरोध न कर सके।

दधीचि की दैनिक दिनचर्या :-

यज्ञ विध्वंश की घटना के बाद महर्षि दधीचि नैमिषारण्य में गोमती एवम् सरस्वती नदी के किनारे अपनी धर्मपत्नी वेदवती के साथ तपस्या करने लगे। भगवान शंकर के अनन्य उपासक महर्षि, अपने आश्रम में ब्राह्मणोचित कर्त्तव्यों के साथ स्वाध्याय करते एवम् सुपात्र छात्रों का विद्या दान के साथ, नित्य नये शोध कार्य करते, अथर्वानन्दन दधीचि, अथर्ववेदी तो थे ही, ब्रह्म विद्या (मधु विद्या) का ज्ञान भी उन्हें अपने पिताश्री से 'विरासत' में मिली थी, उन्होंने वैदिक कर्मकाण्ड का विकास एवम् विस्तार किया, अत: उन्हें वैदिक ऋषि माना गया। विभिन्न वेदों तथा उपनिषदों में उनके मंत्र हैं इसलिए वे मंत्र दृष्टा ऋषि थे। महर्षि प्रवर्ग्य (यज्ञ कर्म विशेष) का उत्तम ज्ञान होने के कारण, वे बड़े-बड़े यज्ञों में भाग लेते थे, उनका व्यक्तित्व और आभामण्डल इतना दिव्य था कि पारलौकिक सत्ता भी उनके अनुग्रह की कामना रखती थी।

राजा क्षुव और महर्षि दधीचि का विवाद :-

प्राचीन काल में महातेजस्वी राजा क्षुव हुए थे, वे महर्षि दधीचि के परम मित्र थे। एक दिन बातों ही बातों में दोनों के बीच दीर्घकाल की तपस्या के प्रसंग का विवाद छिड़ गया। धिरे-धिरे विवाद बढ़ता ही गया और ''ब्राह्मण श्रेष्ठ या क्षत्रिय श्रेष्ठ'' का रुप धारण कर लिया।

विवाद उग्र रुप बन गया। राजा क्षुव और दधीचि का विवाद तीनों लोकों में महान् अनर्थकारी के रुप में विख्यात हुआ।

राजा क्षुव ने उसका प्रतिवाद किया और कहा क्षत्रिय ही श्रेष्ठ हैं, क्योंकि देवराज इन्द्र आठ लोकपालों के स्वरुप को धारण करते हैं, वे समस्त वर्णों और आश्रमों के पालक एवम् प्रभू हैं, इसलिए सबसे श्रेष्ठ राजा हैं, श्रुति भी कहती है कि राजा ही सर्वदेवमय है अत: मैं ही सर्वश्रेष्ठ देवता हूँ। ब्राह्मण की अपेक्षा राजा ही सर्वश्रेष्ठ है, इसलिए हे दधीचि! आपके लिये मैं ही पूज्यनीय और सर्वश्रेष्ठ हूँ, आप यह मान लिजिये, राजा क्षुव का मत सुन कर, भृगुकुल भूषण दधीचि क्रोधित हो उठे और राजा क्षुव से कहने लगे - हे मन्द बुद्धिवाले राजन! तुम धन वैभव के मद में चूर हो, अहंकार के कारण तुम्हारी मन्द बुद्धि मिथ्यावाद में लगी है और तुम्हारी विचार शक्ति नष्ट हो गई है। दधीचि ने ब्राह्मण कुल के गौरव का विचार करके, क्रोध से राजा क्षुव के मस्तक पर प्रहार किया, राजा क्षुव ने पलट कर अपने वज्र से दधीचि पर प्रहार किया और दधीचि को काट डाला। भृगुवंशी दधीचि ने योगी शुक्राचार्य का स्मरण करते हुए पृथ्वी पर मुर्छित गिर पड़े। दधीचि के स्मरण पर योगी शुक्राचार्य वहाँ आ गये और श्रुति प्रतिपादित महा मृत्युंजय मंत्र से शेष पृष्ठ १८ पर...

Mahendra & Co.
An ISO 9001:2008 Certified Company
Engineers Contractors & Interior Decorators

Mahendra Sharma
Mob. 98210 62743

Manish Sharma
Mob. 88507 86061

Mangesh Sharma
Mob. 98218 02062

Vedanta Interiors
Interior Decorators & Contractors

A-703, Koldongri Society, Parsiwada, Sahar Road, Andheri (E), Mumbai - 99. | Tel.: 022 - 2831 4868 | Tel.: 022-4004 4235
mahendra_co@rediffmail.com
mahendraco2012@gmail.com
www.mahendraco.com

पृष्ठ १७ से... दधीचि के शरीर को जोड़ दिया और दधीचि को जीवित कर दिया। शुक्राचार्य ने दधीचि को महा मृत्युंजय मंत्र का उपदेश दिया और कहा कि तुम नियम और श्रद्धा से शिव का स्मरण करते हुए इस मंत्र का जाप करो और इसे सिद्ध करो, शिव के आशीर्वाद से तुम सदा के लिए अजय हो जाओगे। दधीचि ने योगी शुक्राचार्य के आदेशानुसार भगवान शिव को प्रसन्न एवम् संतुष्ट किया और तीन वर प्राप्त किये।

आशुतोष भगवान से अवध्यता, वज्रमय अस्थि और अदीनता का वर पाकर दधीचि प्रसन्न हो गये, वे शीघ्र क्षुव के दरबार में पहुँचे और राजाक्षुव को ललकार कर उनके मस्तक पर लात मारी, राजाक्षुव ने पलट कर वज्र से प्रहार किया, पर इस बार वज्र का कोई प्रभाव नहीं हुआ, वज्र का प्रहार निष्फल हो गया, यह देखकर राजा क्षुव को बड़ा विस्मय हुआ, वे वन में जाकर अपने इष्ट देव नारायण का स्तवन किया और नारायण को प्रसन्न करके, कहने लगा - प्रभु! दधीचि, भगवान शिव के वरदान से सदा के लिए अवध्य हो गये हैं, मेरे वज्र के प्रहार उन पर निष्फल हो जाते हैं, वे अति अहंकारी और निडर हो गये हैं, वे गर्व से कहते हैं कि संसार में वे किसी से भी नहीं डरते, हे नाथ! दधीचि का गर्व चूर करके एक बार उनसे कहलवा दो कि संसार में राजा ही सर्व शक्तिमान और श्रेष्ठ है, भक्तवत्सल भगवान विष्णु अपने भक्त क्षुव का हित साधने, ब्राह्मण का रुप धारण कर, दधीचि के पास गये। महर्षि ने अपने तपोबल से भगवान विष्णु को पहचान लिया और कहा आप पापहरि श्री विष्णु हैं। प्रभु छल कपट छोड़िए और यह ब्राह्मण का रुप छोड़ कर अपने रुप को ग्रहण कीजिए तब भगवान श्रीहरि बोले- हे ब्रह्मर्षि दधीचि! तुम मेरे कहने से एक बार अपने प्रतिद्वंदी राजा क्षुव से कह दो कि तुम उनसे डरते हो और राजा ही सर्वश्रेष्ठ एवम् सर्वशक्तिमान है। 'दधीचि' ने कहा प्रभु! मैं देवाधिदेव पिनाकपाणि भगवान शम्भू के प्रसाद के अलावा कभी और किसी से भी किंचित मात्र नहीं डरता। मैं सदैव निडर और निर्भय रहता हूँ।

भगवान विष्णु ने 'दधीचि' को डराने की चेष्टा की, वे अपनी सेना सहित प्रहार करने लगे। देवताओं ने भी भगवान विष्णु का साथ दिया, जो अस्त्र 'दधीचि' पर चलाये गए, वे सब निष्फल हो गये। विष्णु ने अगणित गणों की वृष्टि की, 'दधीचि' ने उसे भी भस्म कर दिया। 'दधीचि' ने कुशासन से कुशाग्र तोड़ कर, देव सेना को ले ब्रह्माजी के पास आ गये। ब्रह्माजी ने विष्णु को शान्त किया। राजा क्षुव अत्यन्त दीन होकर 'दधीचि' के पास जाकर, प्रणाम करके, प्रार्थना करने लगा- हे मुनिश्रेष्ठ! मुझ पर कृपा कीजिए और मेरी भूल को क्षमा कीजिए। 'दधीचि' ने क्षुव से अनुग्रह किया और कहा-राजन्! ब्राह्मण ही सर्वश्रेष्ठ, पूज्यनीय और शक्तिमान होते हैं, इस सत्य को मान लीजिए, इतना कहकर 'दधीचि' अपने आश्रम को प्रस्थान कर गए। 'महर्षि दधीचि' जितने महादानी, परोपकारी और बलिदानी थे, उतने ही वे निडर और स्वाभिमानी थे, ऐसे महापुरुष के चरणों में 'मेरा राजस्थान' परिवार का शत् शत् प्रणाम!

अश्वशिरा दधीचि :- एक बार देवराज इन्द्र दधीचि को गुरु बनाने के लिए उनके (महर्षि के) पास आये और निवेदन किया, हे मुनि श्रेष्ठ! आप मुझे शिष्य बनाकर ब्रह्म-विद्या का आत्मज्ञान दीजिए। 'महर्षि दधीचि' ने इन्द्र को शिष्य बनाने से इन्कार कर दिया और कहा हे देवेन्द्र! तुम क्रोधी हो, अभिमानी हो, ईर्षालु हो, तुम में कई अवगुण, दोष भरे हुये हैं अत: तुम शिष्य बनाने योग्य नहीं हो। इन्द्र क्रोधित मुद्रा में चुप-चाप चला गया। कुछ समय पश्चात् देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार, ब्रह्म विद्या सीखने की अभिलाषा लिये, एक सच्चे गुरु की खोज में निकले। अचानक उनको आकाश मार्ग से स्वर्ग को जाते हुए नारदजी दिखे, उन्होंने नारदजी से पूछा है देवर्षि! कृपया हमें बतलायें, इस समय संसार में ब्रह्म विद्या को जानने वाला कौन है? नारदजी ने कहा- हे अश्विनी कुमार! इस समय अथर्वा पुत्र 'महर्षि दधीचि' इस विद्या में निपुण है। ब्रह्म-विद्या के जानकार और मधु विद्या के विशेषज्ञ हैं। अश्विनी कुमार विद्या ग्रहण करने की अभिलाषा लेकर दधीचि के पास पहुँचे।

अश्विनी कुमार शल्य चिकित्सा एवम् संजीवनी विद्या में निष्णांत थे उनकी सिद्धि थी कि उनके स्मरण मात्र से रोगों से मुक्ति हो जाती थी। अश्विनी कुमार वेश बदलकर दीन-दु:खियों के दु:ख दूर करते थे, इसलिए देवराज इन्द्र उनकी ख्याती (प्रसिद्धि) से नाराज थे। इन्द्र अश्विनी कुमार से द्वेष रखने लगे। 'दधीचि' ने अश्विनी कुमार को सभी प्रकार से सुपात्र समझकर, उन्हें विद्या सिखाने का निर्णय लिया। 'दधीचि' ने अश्विनी कुमार से कहा - तुम शिष्य बनने योग्य हो, मैं अवश्य तुम्हें ज्ञान दूँगा, इस समय अनुष्ठान में व्यस्त हूँ, तुम कुछ दिन ठहर कर आना, जब इन्द्र को इस बात का पता चला **शेष पृष्ठ १९ पर...**

त्यागमूर्ति महर्षि दधीचि के जन्म जयंती पर शत-शत वंदन!
Satish R. Sunthwal (Dayma)
Mob: 9421660880/ 8856001788
Jitendra Dayma Aditya Dayma

SHRI
Ratan Automobiles
All Two Wheelers Spares & Accessories
Patal Hanuman Shopping Complex,
Shop No.10, Near Shivaji Statue Jalna- 431203

'दधीचि जयंती' सिखलाये परहित का आदर्श,
महर्षि दधीचि जन्म पर्व पर शुभकामनाएं

Hariprasasd Dayma

Ambica Roadways
(COAL TRADING)
Mob. : 9848302959 / 9989253399

Hari Om Trading Company
Mob. : 9848302959

Narmada Enterprises
DISTRIBUTERS IN JK TYRE, SF BATTERIES (EXIDE), RALCO TYRES)
Mob. : 9704621143

Madhu Enterprises
(CEMENT BUSINESS
Mob. : 9393253399

Mahalaxmi Metalex Company
.(Metal box manufacturing unit)
Mob. : 9676586596

Hari Om Store
(Super Market - At Ultratec Cement Factory

Ambica Roadways, 13-236/1 Laxmi Balaji Nagar,
Mancherial, Telangana Bharat- 504208

त्यागमूर्ति, वैदिक ऋषि, दानवीर महर्षि दधीचि
जन्म पर्व पर कोटी-कोटी नमन!

महर्षि दधीचि

आप सरीखे अच्छे किरदार
एवं सकारात्मक सोच रखने वाले लोग
मुझे दिल से याद रहते हैं, मेरे लफ्ज और
दुआओं में आप हर समय रहते हो
आपका स्नेहाशीष सदा बना रहे।

प्रदिप दाधीच (वात्सल्य)
Mob: 9828861491

वात्सल्य-निवास, नरोदडा-लक्ष्मणगढ़, सीकर, राजस्थान, भारत- ३३२३११

पृष्ठ १८ से... तो वह 'दधीचि' के पास आया और कहा हे ब्रह्मऋषि! तुमने मुझे अयोग्य समझकर विद्या ज्ञान देने से इन्कार कर दिया और अब तुम अश्विनी कुमार को योग्य समझ कर ब्रह्म-विद्या का ज्ञान सिखाने तैयार हो गये हो। ब्रह्म-विद्या का ज्ञान अश्विनी कुमार को न दे कर सिर्फ उन्हें (इन्द्र को) ही दें, क्योंकि मैं ही देवताओं का राजा हूँ, इस पर 'दधीचि' ने निडर होकर कहा - देवराज इन्द्र! ब्राह्मण का कर्तव्य है कि योग्य छात्र को विद्या दान करना, अत: आपकी आज्ञा का पालन करना मेरे लिए सम्भव नहीं, इस पर देवराज इन्द्र क्रोधित होकर राजमद में बोले - ''मेरे सिवाय ब्रह्म विद्या का ज्ञान अगर अश्विनी कुमार को दिया गया तो वह उनका शिरोच्छेद कर देगा (दधीचि की गर्दन उड़ा देगा) कुछ समय बाद अश्विनी कुमार विद्याज्ञान प्राप्त करने 'दधीचि' के पास आये। दधीचि ने निर्भयता से इन्द्र की धमकियों की परवाह न करते हुए, अपने सुपात्र शिष्यों व अश्विनी कुमार को ब्रह्म-विद्या दान के लिए तत्पर हो गये।

मातृ भाषा में ही विद्या दान श्रेष्ठ:

अश्विनी कुमार अश्वमुखी थे उन्होंने 'दधीचि' से कहा कि उनकी मातृ भाषा अश्व की भाषा है, अगर इन्हें उनकी मातृभाषा में विद्या दान दिया जाये तो उन्हें आत्मसात करने में सुगमता होगी, इस पर 'महर्षि' ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा - विद्या तो मातृ भाषा में ही ग्रहण करनी चाहिए क्योंकि मातृभाषा में विद्या प्राप्त करने से वह सरलता से सीखी जा सकती है, 'दधीचि' अश्व की भाषा नहीं जानते थे, इस पर अश्विनी कुमार ने कहा कि वे शल्य चिकत्सक हैं तथा मृत संजीवनी विद्या के जानकार हैं। अश्विनी कुमार ने कहा हे गुरुवर! हम शल्य क्रिया के माध्यम से आपका ''मुल मस्तक'' उतार कर, अश्व का मस्तक रोपित कर, अपनी मातृभाषा में यह ज्ञान प्राप्त कर सकते हो। दधीचि की स्वीकृति से अश्विनी कुमार ने शल्य क्रिया द्वारा महर्षि का मस्तक उतार कर, सुरक्षित रख दिया एवम् उसके स्थान पर अश्व का सिर आरोपित कर, अपनी मातृ-भाषा में ब्रह्म-विद्या का ज्ञान प्राप्त किया, जब इन्द्र को 'दधीचि' द्वारा अश्विनी कुमार को ब्रह्म विद्या का ज्ञान देने का पता चला तो वह अत्यन्त क्रोध से 'दधीचि' के आश्रम पर आकर, महर्षि का शिरोच्छेदन कर दिया। ऋषि की पत्नी के शाप के भय से इन्द्र तुरन्त वहाँ से भाग निकला, इन्द्र के जाने के बाद अश्विनी कुमार ने दधीचि का 'मूल मस्तक' पुन: रोपित कर दिया। महर्षि अपने शिष्यों के इस ज्ञान से अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हें आशीष दिया।

महादानी, परोपकारी, त्यागमूर्ति दधीचि का अस्थि दान:-

महर्षि दधीचि ब्रह्म - विद्या का ज्ञान अश्विनी कुमार को देने के बाद, वे अपनी धर्मपत्नी के साथ, गंगा तट की पावन भूमि नैमिषारण्य में भगवान शिवशंकर एवम् महाशक्ति उमा की अर्चना पूजा आदि में बहुत समय आनन्द से बिताया। बहुत समय बीतने के बाद, धिरे-धिरे राक्षसों की ताकत बढ़ने लगी, वे तपस्या के कारण वरदान पाकर शक्तिशाली बन गये। देवताओं की भोगवादी प्रवृत्ति के कारण देवासुर संग्राम में असुरों ने पुन: देवताओं को परास्त कर, उन्हें स्वर्ग से निष्कासित कर दिया। असुरराज वृत्रासुर के आतंक से देवगण त्रस्त हो गये। संसार में त्राहि-त्राहि मच गई। देवता लोग शक्तिहीन हो गये। वे अपने दिव्य अस्त्रों को जीर्ण-शीर्ण एवम् तेज विहिन अवस्था में ऋषि दधीचि के आश्रम के बाहर पड़े देखकर निराश हो गये। अपनी सत्ता साम्राज्य एवम् सम्पत्ति की रक्षा के लिये भगवान विष्णु के पास गये और इस संकट से बचने का उपाय पूछा, इस पर भगवान विष्णु ने कहा कि वृत्तासुर को भगवान शंकर ने वरदान देते हुए कहा था कि तुमने मेरी पूजा करते समय अपनी जीवित अस्थियाँ अर्पण की हैं अत: तुम्हारी मृत्यु सिर्फ महातपस्वी की जीवित अस्थियों से बने शस्त्र से ही हो सकेगी। भगवान विष्णु ने इन्द्र से कहा कि तुम अहम (अहंकार) **शेष पृष्ठ २० पर...**

पृष्ठ १९ से... त्याग कर, 'महर्षि दधीचि' की शरण में जाओ उनके सिरोच्छेद के अपराध का पश्चाताप करते हुए उनसे क्षमा माँगो, याचक बनकर उनकी अस्थि दान की याचना करो उनकी अस्थियों में महान् तेज भरा हुआ है, ऐसे महात्मा के सन्मुख जाकर, उनसे अस्थियों की भीख (भिक्षा) अपने एवम् संसार के कल्याण के लिये माँगो, उन दिव्य महर्षि की हड्डियों में तुम्हारी रक्षा और विश्व कल्याण का सामर्थ्य भरा हुआ है। वे लोक कल्याण हेतु, अपने बहुमूल्य शरीर का दान कर देंगे, उनकी अस्थियों से, तेजस्वी वज्र बनाकर, वृत्तासुर का वध कर, विजयी हो सकते हो। महर्षि महान् दानी और त्यागी हैं, उनसे भिक्षा माँगने पर, संसार के कल्याण हेतु वे अपना स्वर्स्व दान कर देंगे, उनको अपने शरीर से मोह नहीं है, अत: शीघ्रता कर मुनि के शरण में जाकर, भिक्षा की याचना करें, इस पर देवराज इन्द्र सभी देवताओं, गुरु वृहस्पति, ऋषियों एवम् गौमाता के रुप में पृथ्वी माता को साथ लेकर, यहाँ आये हैं। उन्होंने देवताओं से कहा कि यह देह क्षण भंगुर है, इस शरीर से असुरी वृत्ति का विनाश एवम् लोक कल्याण के लिए देवताओं की रक्षा होती है तो यह मेरा सौभाग्य ही है। मैं तो आपके दिव्यास्त्रों का न्यासी हूँ। आपके सारे शस्त्रों का तेज, मेरे मेरुदंड की अस्थियों में स्थित है। अस्थि दान करने से मेरे न्यासी की पूर्ति ही होगी, इस प्रकार वे अपनी अस्थियों के दान हेतु तत्पर हो गये।

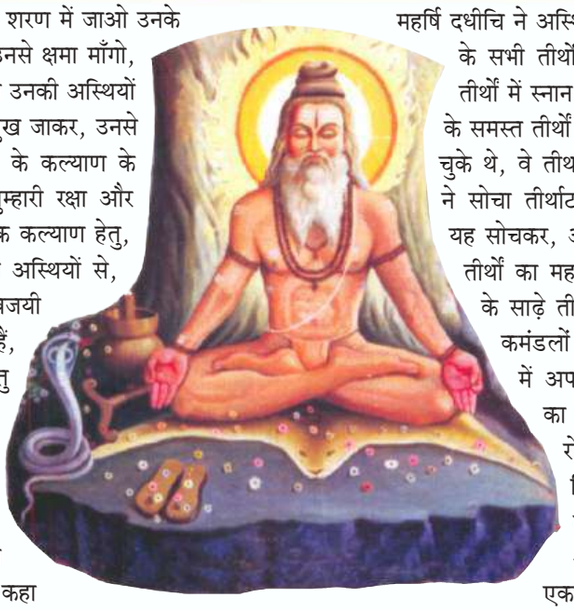

महर्षि दधीचि का सर्व तीर्थाभिषेक -

महर्षि दधीचि ने अस्थियों के दान करने से पूर्व, भारत की पुण्य भूमि के सभी तीर्थों में स्नान करने की इच्छा व्यक्त की, क्योंकि तीर्थों में स्नान करने से मोक्ष प्राप्त होता है। 'दधीचि' त्रैयलोक के समस्त तीर्थों का स्नान एवम् समस्त देवदर्शन का संकल्प ले चुके थे, वे तीर्थाटन को जाने की तैयारी कर रहे थे। देवताओं ने सोचा तीर्थाटन में 'महर्षि' को काफी समय लग जायेगा, यह सोचकर, अपने प्रयोजन के लिए आतुर देवताओं ने सभी तीर्थों का महर्षि के आश्रम पर ही आव्हान किया। त्रैयलोक के साढ़े तीन कोटि तीर्थ एवम् तैंतीस कोटि देवता अपने कमंडलों में जल भर कर, देवकार्य एवम् दैत्य दमन में अपने जीवन का बलिदान देनेवाले महर्षि दधीचि का अभिषेक किया। संसार का यह विलक्षण एवम् रोमांचकारी दृश्य बहुत ही मनोहारी रहा होगा। विश्व के इतिहास में यह पहली घटना थी कि तीर्थाटन करने वालों का अभिषेक किया गया। अभिषेक का सारा जल सरस्वती कुण्ड में जाकर एकत्रित होकर 'मिश्रित' हुआ जो ''दधीचि तीर्थ मिश्रित'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ, इस तीर्थ में स्नान करने एवम् महर्षि का पुण्य स्मरण करने से सभी तीर्थों का फल प्राप्त होता है। महर्षि दधीचि के देह त्याग के बाद, उनकी अणुयुक्त अस्थियों से बने वज्र से देवराज इन्द्र ने महापराक्रमी दैत्यराज वृत्रासुर से भीषण युद्ध किया तथा वज्र के प्रहार से वृत्रासुर का वध किया। वृत्रासुर के वध के बाद देवताओं में पुन: शक्ति का संचार हुआ, धर्मराज की पुन: स्थापना हुयी।

मूल पुरुष दधीचि :-

महर्षि दधीचि द्वारा विश्व कल्याण के लिए आत्मोत्सर्ग कर देने पर ऋषि पत्नी वेदवती जो गर्भवती थी, सती होने को तैयार हुई, इस पर देवताओं ने ऋषि पत्नी को स्मरण करवाया कि उसके गर्भ में ऋषि का तेज विद्यमान है एवम् वह उनका कुल दीपक है, इस पर ऋषि पत्नी ने शल्य क्रिया द्वारा अपने गर्भ से निकाल कर, दधीचि द्वारा स्थापित अश्वस्थ वृक्ष (पीपल का वृक्ष) को अपने पुत्र को सौंपते हुए कहा कि हे अश्वस्थ! आप साक्षात् 'विष्णु' के अवतार हैं, आप इस बालक की रक्षा करना। हे दधिमथी! तुम हमारी कुल देवी हो, तुम्हें मेरा बालक सौंपती हूँ, तुम इस बालक की ''दाई माँ'' बनकर महर्षि के कुल की देख-भाल, पालन-पोषण करना, तत्पश्चात् ऋषि पत्नी वेदवती, पति का ध्यान कर, सती होकर शिवलोक में महर्षि से जा मिली। कुलदेवी दधिमथी के सान्निध्य में पीपल वृक्ष के नीचे पलने के कारण, बालक का नाम ब्रह्माजी ने 'पिप्पलाद' रखा। मुनि पिप्पलाद एक तपोनिष्ठ महर्षि हुए, उनका विवाह राजा अनरण्य की पुत्री पद्मावती से हुआ, उनके सूर्य के समान १२ पुत्र हुए जो दाधीच ब्राह्मणों के गौत्र प्रर्वतक ऋषि हुए, इन ऋषियों के कुल १४४ पुत्र हुए जो दाधीच ब्राह्मणों की शाखाएँ कहलाईं, इस प्रकार महर्षि दधीचि दाहिमा (दाधीच) ब्राह्मणों के मूल पुरुष कहलाये।

महर्षियों में हुए दधीचि महान, दिया तन अपना, देवों को दान
पर उपकार हुए महादानी हुए, धन्य-धन्य दधीचि महान

प्रात:स्मरणीय, महात्यागी, महादानी, परोपकारी, महातपस्वी, ब्रह्मनिष्ठ महर्षि दधीचि के चरणों में 'मेरा राजस्थान' परिवार का शत्-शत् प्रणाम..

जय भारत!

प्रस्तुति: मेरा राजस्थान
गेलार्ड ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन्स

त्यागमूर्ति, वैदिक ऋषि, दानवीर महर्षि दधीचि
जन्म पर्व पर कोटी-कोटी नमन!

१९४७ से भारतीय सुगंधियों के एकमात्र विश्वसनीय निर्माता

अमरनाथ मिश्रा एण्ड कंपनी

हमारे सभी उत्पाद प्राकृतिक फूलों से निर्मित है। इनका प्रयोग हानिरहित है!!

अमरनाथ मिश्रा ब्राण्ड

गुलाब जल
केवड़ा जल
पंचपुष्प जल
तथा
सभी प्रकार के इत्र
अरोमा आयल, केशर
एवम् अगरबतियाँ

दीपक मिश्रा
भ्रमणध्वनि : ९३३१०३०५०२

प्रधान कार्यालय
50, बड़तल्ला स्ट्रीट, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत - 700007
दूरध्वनि : 033-40067772

शाखा कार्यालय
207/F/1, रविंद्र सारणी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत - 700007

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान
भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

महर्षि दधीचि जन्मोत्सव पर
सिखलाये परहित का आदर्श परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष
जन्म पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Ghanshyam Sunthwal
मो: 09391040503

Ashish Sunthwal
मो: 09849003720

Arundeep Enterprises
Dealer & Contractor for :
HYDRO THERMAL & ACCOUSTIC INSULATION MATERIAL
& SYNTHETIC RUBBER & CHEMICAL

Prakriti Papers & Geofabs
Papers & Geo- Fabrics

Flat No. 219 & 220, 'C' Block, 2nd Floor, Al-Karim Trade Centre, (AKTC), M.G. Road, Opp. Ranigunj, Bus Depot, Secunderabad, Telangana, Bharat-500003 I दूरध्वनि : 040-27540083 / 27540050 I Telefax: 040-27540023
अणुडाक : arundeep_enterprises@yahoo.com I ghanshyamsunthwal@gmail.com
Nivas: Flat No 313 Third Floor, Doorno.- 3/4/423/424, Symphony Royale, Narayanguda, Hyderabad-500029 (T.S.)

घनश्याम आशिष सूंठवाल
तालाब का मार्ग, मारवाड़ मूंडवा

एक दिन विश्व के मानचित्र Globe में
INDIA की जगह BHARAT जरूर लिखा जाएगा।
जय भारत!

Suraj
Sim Techno Works Pvt. Ltd.
Complete Pre Engineered Building Solution

Plant-1
(Rolling Shutter Division)
W-76, MIDC industrial Area, Waluj, Aurangabad, Maharashtra, Bharat-431136

Plant-2
(PEB Division)
Gut No.61, Shendurwada Road, Village Murmi, Near Dahegaon Bungalow, Tq. Gangapur, Chhatrapati Sambhaji Maharaj Nagar, Maharashtra, Bharat-431133

Deepak Toshniwal Mob.:- 9371220090
Amol Sarda Mob.:- 9561244222

महर्षि दधीचि का त्याग

महर्षि दधीचि एक गौरवशाली पौराणिक व्यक्तित्व हैं जिन्होंने विश्व के कल्याण के लिए अपने शरीर तक का दान करने में संकोच नहीं किया, उनका दान अतुल्य है। महर्षि के देह दान की कथा इस प्रकार है-

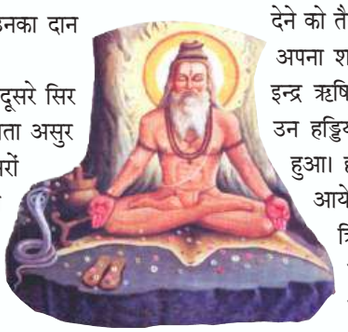

विश्वरूप के तीन सिर थे, वह एक सिर से सोमरस पीता था, दूसरे सिर से सुरा पीता था और तीसरे सिर से अन्न खाता था, उसकी माता असुर कुल से थी, इन्द्र को पता चलने पर उसने विश्वरूप के तीनों सिरों को काट डाला। सोमरस पीने वाला सिर पपीहा, सुरा पान करने वाला सिर गौरैया और अन्न खाने वाला सिर तीतर बन गया, इन्द्र पर ब्रह्महत्या का पाप लगा। ब्रह्महत्या के दोष को चार भागों में बांटा गया। पहला भाग पृथ्वी को, दूसरा भाग वृक्ष को, तीसरा भाग जल को और चौथा भाग स्त्रियों में बांट दिया गया।

विश्वरूप की हत्या का हाल उसके पिता त्वष्टा को चला तो पिता ने कहा, हे इन्द्रशत्रो! तुम अपने शत्रु को मार डालो, यह सुनते ही शत्रु को मारने के लिए हवन यज्ञ किया जाने लगा, इसके समाप्त होने पर अन्वाहार्य पचन नामक अग्नि से भयानक दैत्य प्रकट हुआ, उसने तीन नोक वाले त्रिशूल से अंतरिक्ष को उठा रखा था। त्वष्टा के तमोगुणी पुत्र ने सब लोकों को घेर लिया, उस शूर पुरुष का नाम वृत्रासुर पड़ा, वह युद्ध में देवताओं के अस्त्र शस्त्रों को निगल जाता था, इससे देवता घबरा गये, वे सब मिलकर आदि पुरुष भगवान श्री नारायण के पास गये, उन्होंने भगवान से इस दुष्ट से बचाने के उपाय के बारे में पूछा।

भगवान ने देवताओं से कहा- तुम शीघ्र ऋषिवर दधीचि के पास जाओ, ऋषि से उनके शरीर की भिक्षा मांगो, उनका शरीर उपासना, व्रत और तपस्या से अत्यंत दृढ हो गया है, उनकी हड्डियों से वज्र बनाकर शत्रु पर विजय प्राप्त करो। भगवान की आज्ञानुसार देवताओं ने दधीचि ऋषि के पास जाकर याचना की। दधीचि ऋषि ने पहले तो ज्ञान का उपदेश दिया, अंत में कहा कि परमार्थ के लिए मैं अपना शरीर देने को तैयार हूं। महर्षि दधीचि ने परब्रह्म परमात्मा में अपने को लीन करके अपना शरीर त्याग दिया।

इन्द्र ऋषि दधीचि की हड्डियों को लेकर विश्वकर्मा के पास गये, उन्होंने उन हड्डियों से वज्र बनाकर दे दिया। देवता और दैत्यों में भयंकर युद्ध हुआ। हजारों की संख्या में दैत्य, दानव, यक्ष आदि लड़ने को सामने आये, उस वज्र से सब राक्षस और दानव मारे गये। वृत्रासुर ने अपना त्रिशूल फेंका और गदा से उनके वाहन ऐरावत पर आक्रमण किया। ऐरावत के सिर पर चोट आई परंतु इन्द्र ने अपने विद्या से ऐरावत के माथे पर चोट को ठीक कर दिया, फिर वृत्रासुर पर आक्रमण किया।

कुछ समय बाद इन्द्र के हाथ से छूटकर वज्र युद्ध भूमि में गिर गया। वृत्रासुर बोला- जिस प्रकार तुमने विश्वरूप का सिर काटा था उसी तरह मैं तेरा सिर काटकर अपने भाई का बदला लूंगा। भूतनाथ पर तुम्हारे सिर को चढाउंगा, वह बोला- युद्ध एक प्रकार का जुआ है, इसमें प्राणों की बाजी लगती है। बाण पासे का काम करते हैं और वाहन ही चौसर है, इसलिए इसमें यह पता नहीं चलता कि कौन विजयी होगा? इन्द्र ने आदरभाव से वृत्रासुर को बातों में लगाकर मौका पाकर अपना वज्र उठा लिया, इसके बाद वज्र से वृत्रासुर का सिर काट कर उसकी इह लीला समाप्त कर दी, उसके मारे जाने पर देवताओं ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए इन्द्र पर फूलों की वर्षा की। वृत्रासुर की ज्योति उसके शरीर से निकल कर भगवान में लीन हो गई।

दाहिमा (दायमा) शब्द की उत्पति

गोठ मांगलोद मन्दिर स्थित उक्त शिलालेख में भगवती दधिमती के उपासक दधिमती क्षेत्र के निवासी ब्राह्मणों के लिए 'दक्ष्य:' यह शब्द लिखा गया है, जो दधिमती के शब्द में एकांश दधि शब्द से बना है। एकांश ग्रहण के विषय में प्रथम दध्यड् शब्द की व्याख्या में स्फुट रीति से लिख आए है। दध्य यह शब्द, दधि शब्द से यत प्रत्यय होकर बना है, दध्य शब्द की व्यत्पत्ति यह है 'दधिमथ्या इसे दध्य:', अर्थात् दधिमती के उपासक अथवा 'दधिमती क्षेत्रे भवा दध्या:' जो दधिमती को प्राप्त होने के योग्य हैं वे दध्य और दाहिमा शब्द भी उसी दधिमती (थी) शब्द से संबंध रखता है, उक्त शिलालेख में भगवती का नाम ''दधिमती और दाधीच संहिता में 'दधिमथी' लिखा है'' और वहाँ दधिम: नाम का होने का हेतु भी लिखा है कि, दधिसमुद्र में अंतर्हित विकाटास्य दैत्य का वध किया था, उस समय दधिसमुद्र का मंथन किया जिससे भगवती का नाम 'दधिमथी' हुआ। दाहिमा शब्द दधिमथ शब्द का अपभ्रंश है और दधिमथ शब्द दधिमथी शब्द से अंश प्रत्यय होकर बना है। दांधिमथ शब्द की व्युत्पत्ति यह है - 'दधिमथ्या हमें दधिमथ:' दधिमथी के ये अर्थात दधिमथी के उपासक अथवा दधिमथी क्षेत्र के निवासी अथवा 'दधिमथी मर्हने ते दधि मथा' जो दधिमथी को प्राप्त होने के योग्य है, वे दधिमथ। दधिमथ शब्द उपभ्रंश दाहिमा इस रीति से हुआ है: प्राकृत भाषा में 'घ' को 'ह' हो जाता है जैसे दधि के स्थान में दहि, इस रीति से दधिमथ शब्द का रुप बदलकर 'दाहिमह' हो गया, तदनंतर अंतिम हकार का उच्चारण शिथिल होकर दाहिमा ऐसा उपभ्रश का भी उपभ्रंश 'दायमा' ऐसा कहते है और लिखते है, दाहिमा ब्राह्मण दधीचि ऋषि के वंशज है, जिससे इन की जाति 'दाधीच' इस नाम से प्रसिद्ध होनी चाहिये थी, परन्तु कुलदेवी दधिमथी दधीची और उनके पुत्र पौत्रदी और वशंजो पर पूरा अनुग्रह करके इस वंश की सदा पालन करती रही और अब अपनी दयालुता से द्रवीभूत होकर माता की भांति असीम स्नेह से इस वंश की रक्षा कर रही है, इस हेतु से यह ज्ञाति कुलदेवी के नाम से प्रसिद्ध हुई।

मुझे अपने बराबर कर दोना...

तुम कहते हो हम एक ही हैं
तो अपने बराबर कर दो ना,
बिलोवना जब मैं करती हूँ,
तुम दूध की कढ़ावणी भर दो ना,
बस यूँ ही एक हैं-एक हैं करके,
कहाँ जिंदगी चलती है,
कभी तुम भी सर दबा दो मेरा,
यह भी कमी एक खलती है,
जब मैं खेत में जाती हूँ,
तुम भी घर को संवार दो ना,
तुमने कहा था हम एक ही हैं,
मुझे अपने बराबर कर दो ना,
मत करो वादे जन्मों के,
इस पल खुशी की वजह बनो ना,
कभी लिखने से ध्यान हटे,
तो मायका को घर भी कर दो ना,
आओ पास बैठो,कुछ बात करें,
कभी दिल के जख्म भी भर दो ना,
खुश हूँ, कहना भी पड़ता है,
कुछ एहसासों को समझो ना,
तुमने कहा हम एक ही हैं,
मुझे अपने बराबर कर दो ना।।

प्रदीप दाधीच

दधीचि की सौगात

दाधीच वंश में पैदा होना, बड़े गर्व की बात है।
दान और मान हमारे, पुरखों की सौगात है।।

दानी और ज्ञानी दधिची, पूर्वज हमारे कहलाते हैं।
भिक्षुक बनकर इन्द्रदेव, कभी उनके द्वारे आते हैं।
अस्थि का दान देकर ऋषि ने, इन्द्र को विदा कराया है।
उस दानी के वंशज होना, बड़े गर्व की बात है।
दान और मान हमारे, पुरखों की सौगात है।

अस्थि के वज्रासन बनवा, इन्द्र बहुत हर्षाया है।
उसी वज्र से अन्त किया, वृत्तासुर मार गिराया है।
देवों ने की जय-जयकार, दधीचि नारा लगाया है।
उस दानी के वंशज होना, बड़े गर्व की बात है।
दान और मान हमारे, पुरखों की सौगात है।

पावन पर्व पर प्रण करें सब, ऋषि के पथ पर चलना है।
अस्थिदान, रक्तदान नहीं, तो अन्नदान तो करना है।
अपना कुछ नहीं जाता प्यारे, भण्डार तो दधिमथी को भरना है।
दाधीच वंश में पैदा होना, बड़े गर्व की बात है।
दान और मान हमारे, पुरखों की सौगात है।।

- गोविन्द दाधीच (इनाणिया)

परहित हेतु किया त्याग तभी
महर्षि दधीचि का है अमर इतिहास
महर्षि दधीचि जयंती पर सादर-वंदन

Kundan Sharma
Managing Director
भ्रमणध्वनि : 09830297894

C L BUSINESS PVT. LTD.
90 DEGREE MAGNUS,
Y-19 EP-BLOCK, SECTOR 5, 10th floor, Unit -5
NEAR COLLEGE MORE KOLKATA, BHARAT - 700091
दूरध्वनि : +4006 0026 / 0027 / 4006 6050
अणुडाक :clgroupkolkata@gmail.com अंतरताना : clgroup.co.in

C L INTERNATIONAL
2/21, WHS KIRTI NAGAR, NEW DELHI, BHARAT -110015
Mob. : 087505 59999 / Ph. : 011- 4987 9315
Branches : Delhi, Mumbai, Chennai, Jaipur
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

'दधीचि जयंती'
सिखलाये परहित का आदर्श
परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष
महर्षि दधीचि जन्म पर्व पर
शुभकामनाएं

Srivallabha.R. Dayama - 09448142551
Manoj .S. Dayama - 09449822551

TULAJABHAVANI ROADWAYS
Head Office : Shop No. 221/222, S. S. Shopping Complex,
1St Floor, B.L.D.E, Road, Bijapur, Karnataka, Bharat-586101
दूरध्वनि : 08352-244051, 245551 & 222551

Branches Of Tulajabhavani Roadways
1) Krishnapattanam Port (Ap)
2) Mangalore (Ka)
3) J K Cement Muddapur (Ka)
4) Bagalkot (Ka)
5) Gulbarga (Ka)
6) Acc Ltd ,Wadi (Ka)

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

दाधीच वंश कपाल क्षेत्र राजस्थान में कैसे बसे

महर्षि दधीचि सर्व प्रथम गंगा तट पर रहते थे। दक्ष यज्ञ के बाद नैमिशारण्य में रहने लगे तथा वही इंद्र को अस्थिया दान दी, उनके पुत्र महामुनी पिप्पलाद बाद में सुमेरु पर्वत निवास करने लगे तथा वहाँ से राज मान्धाता के निमंत्रण पर कपाल क्षेत्र (राजस्थान) में माताजी का मन्दिर बना एवं वहीं बस गये, वह कथा प्रस्तुत है :- राजा मांधाताने वशिष्ठ मुनि की आज्ञा से इस पुण्य भूमि में आकर पिप्पलाद के पौत्रों से यज्ञ करवाने के लिए प्रार्थना की कि मैं आप की महिमा सुनकर आपके चरणों में उपस्थित हुआ हूँ, आप मेरा मनोरथ पूर्ण करें, मैं यज्ञ करना चाहता हूँ, तब दाधिचों ने कहा कि हम तप करने के लिए इस पवित्र अरण्य में रहते हैं, हमारी तपस्या में विच्छेद पड़ेगा, परन्तु तुम हमारा नाम सुन कुछ आशा करके आये हो इसलिए हम अतिथि का अनादर भी नहीं कर सकते, आशा भंग करने से उस का पुण्य नष्ट हो जाता है, आप यज्ञ की सामग्री तैयार करें औरन यज्ञ भूमि को स्वर्ण के हेतु द्वार संशोधन करें, इस भगवती यज्ञ में पशु नहीं आने चाहिये। दाधीचों के ऐसे कहने पर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने यज्ञ मंडप में यज्ञ की तैयारी कर यज्ञ प्रारंभ किया। राजा ने यह यज्ञ रुपाल पीठ में किया था और भगवती दधिमथी देवी की आराधना की, जिससे भगवती ने प्रसन्न होकर ऋत्विज् दाधीचों को और राजा मांधाता को कहा कि ''हे मुनिवर! तुमने चरण का शरण लिया है, तुम्हारा कार्य मैं सिद्ध करुँगी और तुम्हारी और तुम्हारे कुल की कुलदेवी होऊँगी, मेरे अनुग्रह से तुम्हारे वंशज समस्त पुरुष बुद्धिमान, यशस्वी, बहुश्रुतौर

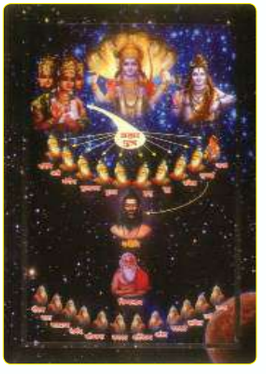

महाभाग (भाग्यशाली) होंगे। दाधीचों को यह वरदान देकर भगवती ने राजा से कहा कि हे राज! तुम सप्तद्वीपा वसुंधरा के शासक और दुष्टों को दमन करने वाले होंगे और तुम्हारे वंशज इस मंडल के राजा होंगे, वे सदा मेरे भक्त रहेंगे और मेरी उपासना करेंगे यह रुपालपीठ मेरा सात्विक स्थान है, मुनि लोक इसका सेवन करते हैं, इसलिए मेरे सात्विक स्थान में कोई भी, कदापि पशु हिंसा कर पूजा नहीं करें।'' भगवती की कृपा से राजा मांधाता का यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न हुआ, तब राजा ने दाधीचों को, जिनकी संख्या १४४ थी, दक्षिणा के लिए कहा, परन्तु उन्होंने दक्षिणा लेने से अस्वीकार किया, तब राजा ने यह उपाय रचा कि एक-एक तांबूल में एक-एक गांव का शासन और एक-एक कन्या का नाम रखकर समस्त दाधीचों को विदाई में एक-एक तांबूल दिया, दाधीचों ने तांबूल ग्रहण किये, उनके साथ कन्या और शासन ग्राम भी आ गये, इस भांति जिस-जिस को जो-जो गांव मिला उसी ग्राम के पीछे उन ब्राह्मणों की शाखा (खापें) हो गई। जैसे-जिसको आसोप ग्राम का शासन मिला और उसके वंशज आसोप ग्राम के निवासी हुये, वे उस ग्राम के संबंध से आसोपा कहलाये अर्थात उन की खाप (शाखा) आसोपा हुई, ऐसे ही ईनाषा, जिस ग्राम को ग्राम-शाखा मिला उसके वंशज ईनाणा ग्राम के संबंध से ईनाण्या कहलाये और उनकी खांप ईनाण्या हो गई, वैसे ही खाटू के संबंध से खटोड, डीडवाणा के संबंध में डीडवाण्या आदि कहलाये।

-बिनोद ईनाणीया, सुजानगढ़

सृष्टि के रचयिता भगवान विश्वकर्मा

अलग-अलग ग्रंथों में विश्वकर्मा की वंशावली के सम्बन्ध में अलग-अलग जानकारी मिलती है, ऐसा क्यों है, कितने विश्वकर्मा हुए हैं?

सर्वप्रथम नारायण की आज्ञा से ब्रह्माजी ने इस पृथ्वी का निर्माण किया तो उन्हें इसे स्थिर रखने की चिन्ता हुई, जब उन्होंने इसके लिए नारायण से स्तुति की तो स्वयं नारायणजी ने विराट विश्वकर्मा का रूप धारण कर इस डगमगाती पृथ्वी को स्थिर किया, पृथ्वी के स्थिर हो जाने के पश्चात विश्वकर्मा ने विभिन्न लोकों की रचना की।

समस्त सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी ने विभिन्न युगों में प्रलय के पश्चात सृष्टि की पुन:रचना की तथा हर युग में विश्वकर्मा ने अपना योगदान दिया, इस कारण अलग-अलग समय के अनुसार अवतार लिया। विश्वकर्मा कोई नाम नहीं है यह तो पदवी ''उपाधि'' मात्र है, जिस-जिस ऋषि-महर्षि ने शिल्प वेद पढ़कर नये विज्ञान का आविष्कार किया वह ऋषि-महर्षि आचार्य के द्वारा 'विश्वकर्मा' पद पर अभिशिष्ट हो, संसार में विश्वकर्मा के नाम से प्रसिद्ध हो जाता है, जिस प्रकार आदिशंकराचार्य जी के पश्चात उनके मठ पर अभिशिष्ट प्रत्येक मठाधीश क्रमश: परम्परा से शंकराचार्य ही कहलाते हैं, चाहे उनका निजी नाम कुछ भी क्यों न हो, इस प्रकार से आरम्भ काल से आज पर्यन्त अनेक विश्वकर्मा हो गये हैं, सारे विश्वकर्माओं की निश्चित संख्या मालुम करना तो असंभव है लेकिन मुख्य 'विश्वकर्माओं' का विवरण इस प्रकार है:

जिस परमात्मा ने समस्त ब्रह्माण्ड को रचा और शिल्पविद्या की मूलपुस्तक अथर्ववेद का प्रकाशन किया वे अनादि 'विश्वकर्मा' हैं, जिस परमात्मा ने अंगिरा को शिल्पविद्या का अधिकारी समझ उनके हृदय में शिल्पविद्या की मूल पुस्तक अथर्ववेद का प्रकाशन किया, हमारे वंश में आदि विश्वकर्मा भगवान अंगिरा हुए और सृष्टि के आरम्भ में महर्षि अंगिरा की उत्पत्ति अग्नि नामक परमात्मा से हुई जो अग्नि शिल्प विद्या का मूल साधन हैं यथा ये ब्रह्मा मानस पुत्रों में से थे। अग्नि के पुत्र अंगिरा के आग्नेय संज्ञा वाले आठ पुत्र हुए बृहस्पति, उत्थ्य, आपत्यद्ध, पथस्य, शासन, धोर, विरूप, सवर्त और सुधन्वा। अंगिरा वंश में आदि शिल्पाचार्य विश्वकर्मा हुए, विश्वकर्मा, संस्कृत साहित्य में अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। प्रथम अर्थ उस विराट शक्ति का बोधक है जिसने सृष्टि को रचा द्वितीय अर्थ है अंगिरा वंश के भुवन का पुत्र विश्वकर्मा, जो शिल्प के प्रवर्तक हुए तथा तृतीय अर्थ है विश्वकर्मा उपाधि, जो विभिन्न कार्यों में दक्ष होने के कारण अनेक व्यक्तियों को प्रदान की गई इसके अतिरिक्त आत्मा, वाणी, प्राण, आदित्य, त्वष्टा तथा प्रजापति के अर्थ में भी विश्वकर्मा शब्द का प्रयोग हुआ है। प्रथम तीन प्रकार के विश्वकर्माओं का वर्णन मिले-जुले रूप में करने से विश्वकर्मा का यथार्थ स्वरूप हृदयंगम नहीं हो सका, अत: हमें उसके यथार्थ स्वरूप को समझने का प्रयत्न करना है। ब्रह्म ऋषि अंगिरा के आप्त्य ऋषि हुए और आप्त्य के पुत्र भुवन तथा भुवन के पुत्र विश्वकर्मा हुए। आश्वलायन ''सर्वानुक्रमणिका'' व्याख्याकार षडगुरू भाष्य के अष्टम् अध्याय में लिखा है कि भुवन नाम आप्त्य पुत्र का है और भुवन का पुत्र होने के कारण विश्वकर्मा का अंगिरस वंश व ऋषि गौत्रत्व है। ऋग्वेद दशम मण्डल के सूक्त, यजुर्वेद अध्याय १७ के मंत्र, एतरेय ब्राह्मण के भाष्यकार सायणाचार्य ने भी विश्वकर्मा का, भुवन पुत्र के रूप में अनेक जगह उल्लेख किया गया है। भुवन का यही पुत्र विश्वकर्मा सब शास्त्रों में देवताओं का शिल्पी कहलाया है, विश्वकर्मा और उसकी सन्तान के विद्वान लेखक ने विश्वकर्मा को भुवन का पुत्र माना है।

इन सब प्रमाणों से यह सिद्ध हो जाता है कि विश्वकर्मा भुवन के पुत्र, आप्त्य के पौत्र तथा अंगिरा के वंश में हुए। वेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में केवल भुवन पुत्र विश्वकर्मा के ही प्रमाण मिलते हैं। विश्व मेदिनी कोष के अनुसार सुधन्वा विश्वकर्मा थे उनके तीन पुत्र हुए, उनमें से ऋभू शिल्पी हुए, ब्रम्हाण्ड पुराण में अंगिरा के सात पुत्रों में से सुधन्वा के अलावा आप्त्य के एक भुवन नामक पुत्र हुआ जो भुवन ऋषि के नाम से विख्यात हुए। आश्वलायन सर्वानुक्रमणिका व्याख्याकृत श्री षड् गुरूभाष्य के आठवें अध्याय में लिखा है कि भुवन ऋषि के भौमन विश्वकर्मा हुए।

विश्वकर्मा भगवान अंगिरा वंशीय होने के आधार पर हम शिल्पी अंगिरा वंशी हैं, सबमें मुख्य होने से ज्यादा प्रसिद्ध ये ही हैं। ऋषि अंगिरा, उपाध्य, भुवन व भौमन, ये सारे के सारे शिल्पी और मंत्र अष्टा ऋषि हुए हैं, भृगु पुत्र शुक्लाचार्यजी और ऋषि सायं की बेटी सोमया नाम **शेष पृष्ठ २५ पर...**

शिल्पकला कौशल में सर्वोच्च एवं सृष्टि के
रचयिता भगवान विश्वकर्मा जी की पूजन दिवस पर सभी को

हार्दिक शुभकामनाएं

Naresh Suthar
Mob: 9898282300

Sanskriti
CREATION
The Work Of Glass & Aluminium

SAINT-GOBAIN | MODIGUARD | OZONE FOR A SAFER WORLD

Block - 14, Plot - 1, Madhav Baug, Ghandhi Nagar, U.M. Road,
Olive circle to bamroli road Surat, Gujarat, Bharat - 395017
E- mail : sanskriticreation2300@gmail.com

पृष्ठ २४ से... की स्त्री से सूर्य तेज के समान त्वष्टा नामक पुत्र हुए यही शिल्प विद्या के द्वारा विश्वकर्मा हुए, महाभारत में मय नामक विश्वकर्मा हुए। धर्म ऋषि के पोते अष्टम् वसु प्रभास को अंगिरा की पुत्री व देवताओं के गुरू बृहस्पति की बहिन विश्रुता/भुवना ब्याही गई, इनके पुत्र विश्वकर्मा हुए। भुवनपुत्र विश्वकर्मा ही आदि शिल्पाचार्य है। काल की दृष्टि से भुवन पुत्र विश्वकर्मा ही आदि शिल्पाचार्य हैं और वे ही सर्वप्रथम हुए हैं। मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज्ञ, श्री विश्वकर्मा के ये पंचपुत्र पंचविधाता के नाम से विख्यात हैं, इनके पांच शिल्प कर्म यज्ञकर्म है जो पवित्र एवं लोक हितकारी हैं। शिल्प देवकर्म, ब्राह्मण कर्म हैं, इन शुभ शिल्पकर्मों के करने वाले सभी शिल्पकार पूज्य एवं वंदनीय हैं। भगवान विश्वकर्मा सही अर्थ में देवता और शिल्प विज्ञान के आदि प्रवर्तक हैं जिन्होंने श्रम और नियम का प्रवर्तन कर जगत का मनोहर रूप बनाया है, ये ही सर्वप्रथम श्रमिक, नियामक हैं जिन्होंने श्रम और कठोर साधना से पंचतत्वों की रचना कर सम्यक सृष्टि का निर्माण नियमन किया है। एतदर्थ वेदों से लेकर महाकवि तुलसी कृत रामायण पर्यंत सभी मान्य ग्रन्थों में इनका उल्लेख मिलता है, बड़े आदर के साथ ऋषि मुनि और महात्माओं ने जगनियंता, विराट, विष्णु, शिव, त्वष्टा, नारायण, विश्वरूप, कश्यप, वाचस्पति, हिरण्यगर्भ, परमब्रह्म, जगदगुरू, शिल्पाचार्य, देवाचार्य, विश्वकर्मा विशारद, विश्वायु और सर्वज्ञ आदि सम्मान सूचक शब्द कहकर इनकी स्तुति गायी है।

विश्वकर्माजी की हम सभी अपने वंश के आराध्य देव के रूप में पूजा करते हैं, वे स्वयं किसकी संतान हैं और उनका क्या परिचय है?

विश्वकर्मा शब्द अनेकार्थी है, आत्मा, परमात्मा, सूर्य अथर्ववेद, ऋषि आदि अनेक अर्थों में विश्वकर्मा शब्द प्रयोग किया जाता है, यहां हम निर्माण के देवता विश्वकर्मा विषय पर लिख रहे हैं। देव श्रेणी के महापुरूषों प्राचीन कालीन ऋषि मुनियों आदि की वंशावली पुराणों में मिलती है, निर्माण का देवता आदिकालीन ऋषियों महर्षियों की श्रेणी में आता है।

धर्म ऋषि के पोते अष्टम वसु प्रभासजी को अंगिरा की पुत्री विश्रुता, जो ब्रह्मा वादिनी थी ब्याही गई, जो भुवना नाम से भी प्रसिद्ध है। प्रभास वसू के पुत्र विश्वकर्मा नाम से विख्यात हुए। माघ मास में शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के पुण्य दिन पुनर्वसु नक्षत्र के अठाइसवें अंश में विश्वकर्माजी ने जन्म लिया। भविष्य पुराण, स्कन्द पुराण के अतिरिक्त वशिष्ठ ने भी विश्वकर्मा की जन्मतिथि का स्पष्ट उल्लेख किया है।

इसका आधार मदनरत्न वृद्ध वशिष्ठ पुराण का यह श्लोक है:-

माघे शुक्ल त्रयोदश्यां दिवा पुण्ये पुनर्वसौ
अष्टाविंशांति में जातो विश्वकर्मा भवानि च

अर्थात्: शिवजी बोले कि पार्वती! माघ मास के शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र के अठाइसवें अंश में विश्वकर्मा के रूप में जन्म धारण करता है, इस प्रमाण में न केवल मासव तिथि का उल्लेख मिलता है अपितु नक्षत्र और उसके अंश की भी जानकारी है, भारत भर में सर्वाधिक स्थानों पर इसी दिन विश्वकर्मा का जन्म दिवस भी मनाया जाता है।

श्री विश्वकर्माजी निर्माण के देवता माने जाते हैं, विस्तार से वर्णन :

शिल्प शास्त्र प्रणेता : अब तक यह स्पष्ट हो गया है कि विश्वकर्मा ने लोक कल्याण के पावन उद्देश्य से प्रेरित होकर अपने शिल्प नैपुण्य से अनेक वस्तुओं की रचना की, अपने उस शिल्पविज्ञान एवं शिल्प नैपुण्य को आगे आने वाली सन्तति के निमित्त चिरस्थायी करने के लिये तथा आगे भी उसका प्रयोग कर मनुष्य को ऐश्वर्यशाली बनाने के लिये उस **शेष पृष्ठ २६ पर...**

पृष्ठ २५ से... ज्ञान को विश्वकर्मा ने व्यवस्थित रूप प्रदान करते हुए अनेक शिल्प शास्त्रों की रचना की।

शिल्पशास्त्रों की दृष्टि से यह इन्जीनियरिंग पर सर्वप्रथम अधिकारिक रचना है, इसे अथर्ववेद के उपवेद की संज्ञा प्राप्त है, यह विश्वकर्मा निर्मित है इसका उल्लेख पूर्व में हो चुका है। वस्तुत: यह सम्पूर्ण शिल्पशास्त्र का समुच्चय है। महर्षि दयानन्द ने भी सब शिल्पशास्त्रों में इसी को सर्वाधिक प्रमाणिक माना है, इस शिक्षा की अन्तिम परिपक्व अवस्था में अन्य सब ग्रन्थों से अधिक समय रखते हुये ६ वर्ष का रखा है तथा इन ६ वर्षों में पढ़कर विमान तथा भूगर्भादि विद्याओं को साक्षात् करना बताया है। विश्वकर्मा ने समस्त शिल्पविज्ञान को चतुर्विध विभाजन कर फिर उनका अवान्तर भेद कर, दस शास्त्रों में निरूपण किया है। उत्पादन की दुष्टि से कृषि, जल तथा खनिज-ये तीन विभाग हैं। आवास की दृष्टि से वास्तु, प्राकार तथा नगर रचना-ये तीन विभाग हैं।

आवागमन के साधनों की दृष्टि से रथ, नौका तथा विमान, ये तीन विभाग हैं, अन्य सभी प्रकार के यंत्रों का चौथा यंत्र विभाग है, इस प्रकार समस्त शिल्प विज्ञान का निम्नलिखित दस शास्त्रों के अन्तर्गत प्रतिपादन किया गया है:

१.कृषि शास्त्र, २.जल शास्त्र, ३.रथ शास्त्र, ४.नौका शास्त्र, ५.विमान शास्त्र, ६.वास्तु शास्त्र, ७.प्रकार शास्त्र, ८.नगर रचना शास्त्र, ९.यन्त्र शास्त्र। इन सभी विषयों पर विश्वकर्मा ने १२ सहस्त्र ग्रन्थ लिखकर शिल्पविज्ञान अथर्ववेद को सम्पूर्ण किया, जो कलयुग में घटकर उन सबका समावेश चार सहस्त्र ग्रन्थों में हो गया, विश्वकर्मा रचित इन शिल्पशास्त्र के ग्रन्थों में केवल पांच-सात ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं। शोषणरहित अर्थव्यवस्था के प्रवर्तक तथा अर्थव्यवस्था की तीन पद्धतियों की दृष्टि से भी विश्वकर्मा को भारतीय समाज व्यवस्था में एक अनुपम स्थान प्राप्त है। विश्वकर्मा के इस वैशिष्टय की और अभी विद्वानों का कम ध्यान गया है परन्तु विश्वकर्मा पद्धति पूर्ण एवं आदर्श है। भगवान श्री विश्वकर्मा ने देवताओं के सभी अस्त्र-शस्त्र, आभूषण, अलंकार, सभी विमान तथा श्रेष्ठ प्रासादों को निर्माण किया। अद्वितीय पुष्पक विमान के कर्ता अदभूत शिल्पी प्रजापति श्री विश्वकर्मा हैं। महाप्रभु-जगतपिता ब्रह्माजी की प्रेरणा से ही श्री विश्वकर्मा ने पुष्पक विमान का निर्माण किया, जिसकी रचना को सौन्दर्य, कला, शक्ति आदि की दृष्टि से नापा नहीं जा सकता। पारिजात आदि दिव्य पुष्पों के चूर्णों से अनेक प्रकार की कलाकृतियों तथा भव्य दृश्यों से सुशोभित होने के कारण ही यह पुष्पक विमान कहलाता है। विश्व के कर्म देवता और इसी देवता की एक संतान सुथार-समाज एक योग्य देवता की योग्य संतान, असंभव को संभव बनाने वाली एवं नित्य नई वस्तु से दुनिया को परिचय कराने वाली सुथार जाति, आज के इस प्रगतिशील युग में सभी की एक ही राय है कि सुथार समाज के किसी भी व्यक्ति को यह भगवान की देन है कि वह किसी भी कार्य को इतने अच्छे तरीके से कर सकता है कि जितना अन्य व्यक्ति नहीं। साथ ही यह कहावत भी प्रचलित है कि सुथार का बेटा कभी भूखा नहीं मरता अर्थात् इसी समाज के प्रत्येक सदस्य में कोई एक विशेष योग्यता अवश्य होती है। आज किसी भी क्षेत्र में देखा जाये तो इस जाति का कोई न कोई सदस्य वहां मौजूद है। यही नहीं बल्कि इस क्षेत्र में अपनी योग्यता के कारण चर्चित भी है, यह अतिश्योक्ति नहीं बल्कि एक निर्विवाद सत्य है, इतनी विशेषताओं से परिपूर्ण होने के बावजूद क्यों यह समाज अपने उच्च सामाजिक मूल्यों एवं परम्पराओं को तिलांजलि दे रहा है, जहां एक और युवा वर्ग अपने खान-पान, रहन-सहन एवम् आचार में निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर है, वहीं दूसरी और प्रौढ़ एवं वृद्ध सज्जन वर्ग में एक गहरी खाई उत्पन्न हो रही है। हमें कुछ करना है, शोषित एवं मजदूर नहीं, बल्कि पोषक एवं निर्देशक बनना है, हमारे प्रदुषित मन को साफ कर जाति में समाज कंटकों के कारण उत्पन्न ईर्ष्या-भावना एवं गुटबन्दी को मिटाना है, आज शिक्षित वर्ग का यह नैतिक कर्त्तव्य बन गया है कि समाज में इस तरह की चेतना पैदा करें, जिससे सुधार की लहर आ जाये। 'गेलार्ड ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन्स' परिवार का सभी जांगीड़ समाज बंधुओं से नम्र निवेदन है कि आपसी रंजिश एवं मनमुटाव को भुला कर, मिलजुल कर समाज व देश के हित में कार्य करें, ताकि जांगीड़-सुथार समाज का गौरवमय स्थान बरकरार रहे, यही श्री विश्वकर्मा प्रभु की सच्ची सेवा-पूजा पूजन दिवस पर होगी।

शिल्पकला कौशल में सर्वोच्च एवं दृष्टि के रचयिता भगवान विश्वकर्मा जी की पूजन दिवस पर सभी को हार्दिक शुभकामनायें

SHYAM SHARMA
Mob: 9425048472
M/S Indermani Steels
150, City Centre, 1St Floor, 570, M.G. Road,
Indore, Madhya Pradesh, Bharat-452001

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

१७ सितम्बर २०२५
भगवान विश्वकर्मा पूजन दिवस पर विशेष प्रस्तुति

अंगिरा ऋषि का नाम जांगिड़ था, जांगिड़ ब्राह्मण समुदाय द्वारा लिखित किताबों में लिखा है कि अर्जुन वृक्ष का नाम जांगिड़ था, अर्जुन वृक्ष के नीचे बैठ कर अंगिरा ऋषि ने तप किया था, इस कारण से अंगिरा ऋषि का नाम जांगिड़ हुआ, अंगिरा ऋषि ने जिस भूमि पर बैठ कर तप किया था, उस भूमि का नाम जांगिड़ पड़ गया जो बीकानेर तथा नागोर के आस-पास है।

पूर्व पुरूषों के अमर कृत्यों का उल्लेख, जिस पुस्तक में पाया जाए उसे इतिहास कहते हैं और पूर्व पुरूषों के अमरकृत्य को ही आदर्श मानकर हम अपनी तथा अपने समाज की उन्नति के प्रयासरत रहते हैं, जिस जाति का पूर्व इतिहास नहीं होता अर्थात् जो जातियां अपने पूर्वजों का सम्यक् ज्ञान नहीं रखती, वे धीरे-धीरे अधोगति को प्राप्त होकर अपना अस्तित्व खो बैठती है जांगिड़ समाज का प्राचीनतम इतिहास ब्रह्मा जी से प्रारम्भ होता है, जो वेद शास्त्र तथा पुराणों के अनुसार प्रथम मानव थे, जिनसे ब्रह्माजी के सात मानस पुत्र हुए उनके नाम १.मरीचि, २.आत्रि, ३.अंगिरा, ४.पुलस्त्य, ५.पुलह, ६.कृतु ७.वशिष्ठ हैं, ये सभी वेदों के पूर्ण ज्ञाता थे, ये सातों प्रवृति मार्ग प्रवर्तक वेदाचार्य थे, इन्होंने वेद धर्म का प्रचार करते हुए सृष्टि का विस्तार किया, वर्तमान में सम्पूर्ण मानव जाति इन्हीं सप्तर्षियों की संतान हैं, इनकी स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए ध्रुव तारे के निकटतम परिक्रमा करने वाले सात तारों का इन्हीं सप्त ऋषियों के नाम पर नामकरण किया गया। वायु पुराण अध्याय ५ में ब्रह्मा जी के मानस पुत्रों की संख्या ९ तथा शिव पुराण रूद्र संहिता खण्ड २ में संख्या १० लिखी है, इनमें ३ ऋषि भृगु, नारद तथा दक्ष को भी मानस पुत्र माना गया है। ब्रह्मर्षि अंगिरा ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में सर्वाधिक प्रमुख ज्ञानी थे। शिव पुराण में ब्रह्माजी कहते हैं ''मेरे सिर से अंगिरा, नेत्र से मरीचि तथा अन्यान्य अंगों से पांचों ऋषि उत्पन्न हुए'' अंगिरा अन्नेय नाम वाला बड़ा विद्वान तथा उच्चाशय ऋषि था इस प्रकार ब्रह्मर्षि अंगिरा को ब्रह्माजी के मानस पुत्रों में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त था। ब्रह्मर्षि अंगिरा के हृदय में सर्वप्रथम अथर्ववेद का प्रकाश हुआ, अत: वेदाचार्यों में ये अग्रणी हुए।

वेद चार हैं - ऋग ज्ञान वेद है, यर्जु यज्ञ वेद है, साम उपासना वेद है तथा अथर्व विज्ञान वेद है।

वेद वह बही है जिसने ज्ञान, कर्म व उपासना द्वारा विज्ञान की प्राप्ति की है, अत: ऋगवेद, यर्जुवेद तथा सामवेद का लक्ष्य विज्ञान वेद अथर्ववेद है इस दृष्टि से चारों वेदों में अथर्ववेद की महत्ता सुस्पष्ट एवं सर्वोपरि है।

अथर्ववेद के १९ वें कांड के ३४ वें सूत्र में लिखा है :

अंगिरा तुम्हारा ही नाम जांगिड़ है और श्री अंगिरा ऋषि ब्रह्माजी के पुत्र हैं इसलिए यह प्रमाणित है जांगिड़ों की उत्पत्ति ब्रह्माजी से हुई है।

महर्षि अंगिरा के अधिकतर आश्रम सरस्वती नदी के उत्तर **शेष पृष्ठ २८ पर...**

शिल्पकला कौशल में सर्वोच्च एवं दृष्टि के रचयिता भगवान विश्वकर्मा जी की पूजन दिवस पर सभी को हार्दिक शुभकामनायें

लक्ष्मण खेताराम्जी जांगिड़

Sachin Construction
Amit Construction

Main Office : Flat No. 3, Building No.3, Jawahar Jyoti Co. Hsg. Soc. Ltd. Plot No. 101, Off 15 Road, Near Hajoori Bridge Pipe line, Louiswadi, Thane West, Maharashtra, Bharat-400604 Email : info@sachinconstruction.co.in

Branch Off : Ground Floor, Ashu Apartment, Sambhaji Path, Vishnu Nagar, Naupada, Thane, Maharashtra, Bharat- 400 602
Email : info@amitconstruction.com, laxman@amitconstruction.com
Tel : 022-25421473 Mob. 9820009345/ 9819343423
Website : www.sachinconstruction.co.in/ www.amitconstruction.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पृष्ठ २७ से... में थे, कुछ आश्रम दक्षिणी किनारे पर भी थे। सरस्वती नदी जिस प्रदेश के मध्य बहती थी उसे प्राचीन काल में जांगल देश कहा जाता था। यमुना से सतलज नदी तक तथा पश्चिम में बीकानेर तक जांगल देश का विस्तार था, यह जांगल देश अंगिरा कुल की तपोभूमि थी इसके कारण अंगिरा को जांगिड़ भी कहा जाने लगा, इस प्रतापी वीर अंगिरा ने ही समस्त संसार को जीत कर इन्द्र पदवी धारण कर अत्याचारियों से प्रजा की रक्षा की। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त प्राचीन ग्रन्थों तथा शिला-लेखों में अनेक नामों से अभिहित किया गया है। कई नाम इसकी भौगोलिक विशेषताओं के कारण हैं, जबकि अनेक नाम उन जातियों के नाम से जाने गये हैं, जिन्होंने समय-समय पर अपना आधिपत्य जमाया। सर्वाधिक प्राचीन नामों में मरू, धन्व, जांगल, मत्स्य, वाल्व हैं जिनका वर्णन ऋग्वेद से प्राप्त हुआ लगता है। मरू व धन्व प्राय: समानार्थक शब्द हैं जो जोधपुर सम्भाग के लिये विशेष तौर पर लिये जाते हैं। ''जंगल'' वह क्षेत्र था, जिसमें खुले आकाश के नीचे शमी, कैर, पीलू जैसे वृक्ष हों, आधुनिक बीकानेर का क्षेत्र इस नाम से जाना जाता था जहां 'जांगल' नामक प्राचीन समृद्ध नगर है और जहां के शासकों को जांगलधर बादशाह कहा जाता था, ऐसा अनुमानित है कि यह प्रदेश कौरवों के पैतृक राज्य का ही एक अंग था, महाभारत काल तक जांगल देश काफी प्रसिद्ध था। काम्यक वन जहां पाण्डवों ने वनवास का अधिकांश समय व्यतीत किया, जांगल देश में ही था। सरस्वती नदी के तट पर अवस्थित कुरूक्षेत्र इसका केन्द्र था, इसी कारण जांगल देश कों कुरू जांगल नाम भी मिलता है।

वर्तमान में बीकानेर के निकट 'देशनोक' में करणी देवी का विख्यात मंदिर है, यह 'देशनोक' जांगल प्रदेश की नाक था, यानी जांगल प्रदेश की सीमाएं थी। सम्भवत: यही कारण है कि जांगिड़ ब्राह्मण समाज का उक्त जांगल प्रदेश, जो वर्तमान में राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली है, आज भी बहुमूल्य है। पावन गंगा का उद्गम स्थल गंगोत्री, जमुना का जमनोत्री तथा नर्मदा का अमर कंटक है, जो कि निर्विवाद है, उसी भांति जांगिड़ अथवा अंगिरा वंशियों का उद्गम स्थल भी जांगल प्रदेश है।

गोयनका मंदिर धाम में भादो अमावस्या महोत्सव संपन्न

कोलकाता: सती महापर्व भाद्रपद अमावस्या के अवसर पर श्री श्री बीरां बरजी सेवा समिति द्वारा गोयनका दादी मंदिर कोलकाता धाम में त्रिदवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें दादी का अलौकिक श्रृंगार कर अखंड ज्योति छप्पन भोग सहित अनेक आयोजन हुए, दादी जी की मेहंदी के साथ उत्सव का शुभारंभ हुआ, जिसमें गोयनका परिवार की बहू बेटियों ने दादी जी के हाथों को मेहंदी से सजाया ।

श्रीमती सरला पवन गोयनका द्वारा आयोजित दादी का महामंगल पाठ गायन ऋचा कनोडिया ने किया, जिसका मुख्य आकर्षण दादी का गजरा एवं चुनरी उत्सव रहा, तत्पश्चात दादी जी का विधिवत महाअभिषेक दूध, दही, शहद, गुलाब जल आदि से करके श्रीमती अलका आजाद गोयनका द्वारा १००८ जावा फूल, लौंग इलाइची एवं सूखे मेवे से पुष्पार्चन किया गया। अमावस्या के दिन दादी जी के धोक पूजन हेतु प्रातः ६:०० बजे से ही दादी भक्तों की लंबी कतार लग गई, जिसमें कोलकाता वासी समस्त गोयनका परिवारों ने दादी जी के दरबार में अपनी हाजिरी लगाई, सायं ५:०० बजे से सुप्रसिद्ध भजन प्रवाहक कमल कुमार गोयनका एवं श्री राम मेहरा एवं अन्य भजन गायको द्वारा भजनों की सरिता प्रवाहित की गई, जिसका सभी भक्तों ने अत्यंत झूम-झूम कर आनंद उठाया। दादी की रसोई में सभी भक्तों ने स्वादिष्ट प्रसाद ग्रहण किया, सभी श्रद्धालुओं को दादी जी का महाप्रसाद वितरण कर उत्सव का समापन किया गया।

समिति के सभी सदस्यों द्वारा उत्सव को सफल बनाने हेतु अपना सक्रिय योगदान दिया, इस अवसर पर गोविंद राम गोयनका, प्रहलाद राय गोयनका, हनुमान प्रसाद गोयनका, संतोष गोयनका, संजय गोयनका (बेलूर) सुशील गोयनका (न्यू अलीपुर) कमल गोयनका, अभिनव गोयनका, जितेंद्र गोयनका, विकास गोयनका, कमल गोयनका (हावड़ा), पवन गोयनका अध्यक्ष, सुभाष चंद्र गोयनका सचिव, कमल गोयनका कोषाध्यक्ष, प्रमोद गोयनका , महेश गोयनका, पवन गोयनका पंचवटी, प्रदीप कुमार गोयनका, श्रवण गोयनका, निर्मल गोयनका, राम रतन गोयनका, शिवरतन गोयनका, विजय गोयनका, विपुल गोयनका, अजय गोयनका, आदित्य गोयनका, राजेंद्र गोयनका श्रीमती हेमा राजेश गोयनका, माधुरी सुभाष गोयनका, बीना प्रकाश गोयनका, रेनू, माया, शिखा, सीमा, प्रियंका, रूपा, विनीता, पूजा सुनीता गोयनका सहित परिवार एवं मारवाड़ी समाज के विशिष्ट अतिथिगण तथा स्थानीय अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति से भाद्रपद अमावस्या के इस महापर्व का आयोजन अत्यंत उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ। यह जानकारी समिति के सचिव सुभाष चन्द्र गोयनका ने मेरा राजस्थान को दी है।

अग्रबंधू सेवा समिति द्वारा आयोजित निःशुल्क हेल्थ चेकअप कैम्प

मुम्बई: अगवाल समाज की अग्रणी संस्था अग्रबंधू सेवा समिति, मुम्बई द्वारा रविवार, १७ अगस्त को निःशुल्क हैल्थ चैकअप कैम्प संस्था के कार्यालय परिसर में संस्थाध्यक्ष अमरीशचन्द्र अग्रवाल की अध्यक्षता, ट्रस्टी लक्ष्मीनारायण अग्रवाल (मन्नू सेठ) की प्रेरणा, मानद् मंत्री उदेश अग्रवाल तथा कोषाध्यक्ष गोपालदास गोयल के मार्गदर्शन एवं महिलाध्यक्षा सुधा अग्रवाल व महिला मंत्री मधु अग्रवाल के सान्निध्य में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

ट्रस्टी कानबिहारी अग्रवाल एवं सुयक्त मंत्री अनिल आर. अग्रवाल ने संयुक्त जानकारी में 'मेरा राजस्थान' को बताया कि इस कैम्प के माध्यम से कैंसर टैस्ट, प्रोस्टेट कैंसर टैस्ट, सर्वाइकल कैंसर टैस्ट के साथ ब्लड प्रैशर, टैस्ट, ब्लड शुगर टैस्ट करने के अलावा डॉक्टरों द्वारा स्त्री रोगों के उपचार हेतु सलाह प्रदान की।

संयुक्त कोषाध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल ने बताया कि आर्थिक तंगी एवं जागरूकता की कमी के कारण बहुत महिलाएं समय पर कैंसर जांच नहीं करवा पाती, जिससे अन्य जटिल बीमारियों की चपेट में आ जाती हैं, इसी संवेदनशीलता को ध्यान में रखकर इस निःशुल्क मेडिकल चैकअप कैम्प का आयोजन किया गया।

कर्मठ सदस्य राजेन्द्र अग्रवाल एवं उपाध्यक्षा स्नेहलता गुप्ता व ज्योति अग्रवाल ने कहा कि इस कैम्प में में स्पेशलिस्ट हेल्थकेयर ग्लोबल एंटरप्राइजेज लिमिटेड, बोरवली, मुम्बई के अनुभवी डॉक्टरों की टीम द्वारा सभी उपस्थितों के टैस्ट कर कैम्प को सफल बनाया।

महिला सदस्यों में नूतन अग्रवाल, सीमा गुप्ता, सीमा अग्रवाल ने महिलाओं की सभी प्रकार की टेस्टिंग सम्पन्न कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा कहा कि इस कैम्प के माध्यम से सैकड़ों महिलाओं व पुरुषों ने भी लाभ उठाया। आयोजन को सफल बनाने में उपाध्यक्ष बृजमोहन अग्रवाल, सदस्य चमन अग्रवाल, महिला समिति की उपाध्यक्षा प्रेमलता अग्रवाल, सदस्याओं में पिंकी अग्रवाल, जया गोयल, नीता जैन, नेहा जैन आदि ने व्यवस्था बनवाने एवं मैडिकल कैम्प को सम्पन्न कराने में सहयोग दिया, संयुक्त मंत्री सविता अग्रवाल ने सभी उपस्थित डॉक्टर्स, नर्सों, सहयोगी महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

अग्रबंधू सेवा समिति मुम्बई का महारुद्राभिषेक कार्यक्रम सम्पन्न

मुम्बई: सनातन धर्म में प्रत्येक त्यौहार महत्वपूर्ण होता है, लेकिन श्रावण मास का विशेष महत्व है, इसी बात को ध्यान में रखते हुए अग्रबंधू सेवा समिति मुम्बई द्वारा श्रावण महीने में रविवार, २७ जुलाई को भगवान शिव की पूजा-अर्चना और महारुद्राभिषेक संस्था के कार्यालय मालाड पूर्व, मुम्बई में आयोजित किया गया। संस्था के मानद् मंत्री उदेश अग्रवाल ने 'मेरा राजस्थान' को कहा कि शिवलिंग के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु और ऊपरी भाग में देवों के देव महादेव विराजमान रहते हैं, अतः शिवलिंग की पूजा से सभी देवों की पूजा हो जाती है। भगवान शिव की विधिवत रूप से पूजा-अर्चना संस्था के ट्रस्टी लक्ष्मीनारायण अग्रवाल 'मन्नू सेठ' एवं उनकी धर्मपत्नी सुधा अग्रवाल, 'महिला समिति अध्यक्ष' ने शिवलिंग पर चन्दन का लेप लगाकर दूध, दही, शहद, घी, बेलपत्र, धतूरा, गंगाजल और गन्ने का रस, सुपारी एवं अन्य सामग्री आदि से भगवान शिव का रुद्राभिषेक कर की। विद्वान ब्राह्मणों ने रुद्राष्टाध्यायी के सस्वर पाठ के साथ यह अनुष्ठान पूरा कराया, अनुष्ठान में संस्था के सदस्य परिवारों ने पूरे देश की एकता, विकास और समृद्धि की कामना की।

आयोजन की अध्यक्षता अमरीशचन्द्र अग्रवाल ने की तथा व्यवस्था में मानद् मंत्री उदेश अग्रवाल का विशेष योगदान रहा, संस्था के ट्रस्टी जगदीश गुप्ता एवं कानबिहारी अग्रवाल व दिनेश कनोडिया, कोषाध्यक्ष गोपालदास गोयल, उपाध्यक्ष बृजमोहन अग्रवाल, संयुक्त मंत्री अनिल आर. अग्रवाल एवं बृज किशोर अग्रवाल, संयुक्त कोषाध्यक्ष प्रवीण टी. अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्यों में राजेन्द्र अग्रवाल, चमन अग्रवाल तथा महिला समिति की मंत्री मधु अगवाल, उपाध्यक्षा ज्योति अग्रवाल, संयुक्त मंत्री बबीता गोयल, कोषाध्यक्षा अनिता अग्रवाल, सदस्याओं में जया गोयल एवं नूतन अग्रवाल व मीत अग्रवाल ने उपस्थित रहकर अभिषेक किया और अंत में सभी उपस्थित व मान्यगणों भगवान शिव की आरती कर स्वयं को कृतार्थ किया तथा महाप्रसाद ग्रहण किया।

श्री आदर्श रामलीला समिति द्वारा भजन गायन एवं प्रतियोगिया संपन्न

मुंबई: श्री आदर्श रामलीला समिति मुंबई के तत्वाधान में पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी मारवाड़ी कमर्शियल हाई स्कूल श्री काशीनाथ गाड़िया सभागृह चीराबाजार, मुबई में अध्यक्ष राजेन्द्र अग्रवाल के मार्गदर्शन में अंतर्विद्यालय प्रतियोगिता संपन्न हई। मंत्री कानबिहारी अग्रवाल ने 'मेरा राजस्थान' को बतलाया कि प्रतियोगिताओं में कोलाबा से विरार के १५ स्कूलों के छात्र / छात्राओं ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिताओं का संयोजन/ कोषाध्यक्ष वैभव गुप्ता ने किया। सहसंयोजन देवेन्द्र अग्रवाल, संदीप अग्रवाल और आनंद शुक्ला ने किया।

पुरस्कार वितरण मुख्य अतिथि रवीन्द्र संघवी, विभाग संघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, परेल विभाग के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ।

प्रथम स्थान: चैतन्य साधले - चिकित्सक समुहा शिरोलकर हाई स्कूल निबंध प्रतियोगिता (सीनियर)

प्रथम स्थान: रोशनी यादव - के.जे.एस. सर्वोदय विद्यालय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (जूनियर)

प्रतियोगिता के लिए निर्णायक मंडल में डॉ. जंखाना हकानी, अधिवक्ता दीप्ति गुप्ता तथा डॉ. मनाली मथुरिया ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं, उन्होंने सभी छात्र-छात्राओं की प्रस्तुतियों की सराहना की तथा उनका उत्साहवर्धन किया।

इस अवसर पर संस्था के संचालक मंडल उपाध्यक्ष अनिल पी.अग्रवाल, ट्रस्टी घनश्याम पहलाजानी (सहपत्नी), अरुण गोयल, सतीश माहेश्वरी, नरेंद्र एस. अग्रवाल, मृदंग मथुरिया, राहुल हकानी, राधेश्याम मिश्र, राकेश अग्रवाल आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

संयोजक एवं कोषाध्यक्ष वैभव गुप्ता ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया तथा मेहमानों ने प्रसाद ग्रहण किया।

-कानविहारी अग्रवाल

भगवान श्री कृष्ण व राधारानी के भजनों की थानदार प्रस्तुति

मुंबई: श्री बृजमंडल पंजीकृत मुंबई द्वारा गिरगांव चौपाटी स्थित श्री बृजमंडल हॉल में महिला समिति द्वारा अध्यक्ष सुरेशचंद्र अग्रवाल के सानिध्य में भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में भव्य नंदोत्सव कार्यक्रम सुरमधुर गायक अवधेश गोस्वामी के भक्ति भजनों के साथ आयोजित किया गया। भगवान श्री कृष्ण एवं राधारानी की अद्भुत प्रस्तुति तथा मनभावन नृत्य ने सभागार में उपस्थित कृष्ण भक्तों को हृदय से मंत्रमुक्त कर दिया।

कार्यक्रम में महिला समिति संरक्षिका नीना अग्रवाल, उपाध्यक्षा अनीता अग्रवाल व रेणु अग्रवाल, कोषाध्यक्षा मधु अग्रवाल सदस्याओं में अंजलि अग्रवाल, हेमलता अग्रवाल, नीलम अग्रवाल, कांता अग्रवाल का विशेष योगदान रहा संस्था के ट्रस्टी कानबिहारी अग्रवाल, उपाध्यक्ष रविशंकर अग्रवाल व राजेश मित्तल, संयुक्त मंत्री गौरव शर्मा व विवेक अग्रवाल, कोषाध्यक्ष अनिल आर अग्रवाल, सदस्यों में उमेश मित्तल, पवन अग्रवाल, नरेंद्र अग्रवाल, सुनील अग्रवाल, धर्मेश गर्ग, गोविंद अग्रवाल, ओमप्रकाश अग्रवाल एवं अन्य संस्था सदस्य उपस्थित थे।

कोषाध्यक्ष अनिल आर अग्रवाल ने 'मेरा राजस्थान' को बताया कि कार्यक्रम बहुत भव्यता के साथ संपन्न हुआ, सभी भक्तों को प्रसाद के डिब्बे प्रदत्त किए गए। कार्यक्रम की व्यवस्था संदीप अग्रवाल, राकेश अग्रवाल, राजीव अग्रवाल ने की थी।

'मेरा राजस्थान' के प्रबुध्द पाठक का निधन

कोलकत्ता: विश्व में फैले समस्त राजस्थानियों की विश्वसनिय पत्रिका 'मेरा राजस्थान' के प्रबुध्द पाठक व अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय सभागार में सम्मेलन के निवर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री व सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी भानीराम सुरेका के परलोकगमन पर उनको पुष्पांजलि अर्पित कर कोलकत्ता केंद्रीय कार्यालय में श्रद्धांजलि अर्पित दी गई।

श्री भानीरामजी सुरेका को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया ने कहा कि इस सत्र में कोई पद पर नहीं रह कर भी हमारे मार्गदर्शक बने रहे और सम्मेलन द्वारा आयोजित प्रत्येक कार्यक्रमों में भाग लेते थे, उन्होंने तन, मन, धन से सम्मेलन को अपनी सेवायें प्रदान की, भानीराम जी का अपने समाज के प्रति समर्पण हमलोग को प्रेरणा देता रहेगा। सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने कहा कि श्री भानीराम जी के शोक सभा में आना पड़ेगा, इसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्द लाल रूंगटा जी ने कहा कि श्री भानीराम जी से उनका रिश्ता २००१ से शुरू हुआ, वो मेरे लिए सम्मानिय थे। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राम अवतार पोद्दार ने कहा कि श्री भानीराम जी से उनका सम्बन्ध ४ पीढ़ीयों का है, भानीराम जी मेरे छोटे भाई जैसे थे। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला ने कहा की श्री भानीराम जी बहुत ही मिलनसार आदमी थे। भानीराम जी समाज के चिंतक थे और बहुत ही मृदुल स्वभाव के व्यक्ति थे। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष सराफ ने कहा कि श्री भानीराम जी से उनका सम्बन्ध ३५ वर्षों का था। निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री संजय हरलालका ने कहा कि भानीराम जी ने सबसे पहले मुझे सम्मेलन के वार्षिक सदस्य के रूप में जोड़ा था। वित्तीय उपसमिति के चेयरमैन आत्माराम सोंथलिया ने कहा कि भानीराम जी सेल्फ मेड आदमी थे। पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष नन्द किशोर अग्रवाल ने कहा कि भानीराम जी में सेवा भावना बहुत थी, वह कभी थकते नहीं थे। उपस्थित राजस्थानी समाज सेवियों ने भानीराम सुरेका जी के लिए एक मिनट का मौन रख कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

पैदल चलना यानी फिट रहना

पैदल चलना या टहलना उत्तम व्यायाम है जिसके लिए किसी प्रकार के प्रशिक्षण, उपकरण की आवश्यकता नहीं होती, तेज गति से टहलना तो उत्तम व्यायाम है ही, सामान्य चाल से पैदल चलने से भी लगभग सभी अंगों का व्यायाम हो जाता है। शरीर, स्वस्थ, सक्रिय बना रहता है, कार्य क्षमता में वृद्धि होती है, टहलना सुरक्षित, कष्ट रहित, बिना खर्च का व्यायाम है। यदि थोड़ी दूर शापिंग करने, आफिस जाने या अन्य कार्य के लिए जाना हो, तो पैदल जाएं। आफिस जाते समय एक स्टाप बाद बस पकड़ें या एक स्टाप पहले उतर जाएं।

यदि पैदल चलने की आदत नहीं है, तो आज से ही शुरु करें, धीरे-धीरे दूरी, गति बढ़ाएं, पैदल चलने, टहलने के लिए किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं होती, एक जोड़ी अच्छी क्वालिटी के आरामदायक जूते खरीदें और घूमना शुरु कर दें। समतल स्थान पर चलें, पहाड़ पर चढ़ें या ढाल पर उतरें, हर प्रकार का पैदल चलना व्यायाम ही है, बस टहलते समय कमर, गर्दन सीधी रखें, हाथों को नियमित गति से चलाएं।

पैदल चलने में मौसम का कोई बंधन नहीं होता, वैसे तो कभी भी किसी भी स्थान पर पैदल चल सकते हैं, सुबह खुली, स्वच्छ हवा में घूमने का अलग ही आनंद है, जिससे शरीर के साथ ही मन भी स्वस्थ रहता है। ठंडक के मौसम में हल्की धूप निकलने पर और वर्षा ऋतु में छाता लगाकर घूमने से वर्षा का आनंद लिया जा सकता है, घास पर नंगे पैर चलना स्वास्थ्यवर्द्धक माना जाता है।

घूमते समय प्रकृति का भरपूर आनंद लेते हुए टहलिए, मन प्रसन्न हो जाता है तनाव, चिंता दूर हो जाती है, यदि कोई मनपसंद साथी घूमने के लिए भी मिल जाता है, तो इसका अलग ही आनंद होता है। गप्पबाजी, विचारों का आदान-प्रदान से सफर आसानी से कट जाता है, बोरियत नहीं होती साथियों के साथ टहलने से अनेक समस्याओं का समाधान भी हो जाता है। घूमते समय हल्की-फुल्की वार्तालाप ही करनी चाहिए, जिससे टकराव और तनाव होने की नौबत न आए। घूमने-टहलने की गति और दूरी, क्षमता अनुसार रखें, धीरे-धीरे बढ़ाएं, जिससे थकान नहीं हो, इच्छा हो तो तेजी से चलें या फिर आराम से टहलें, दोनों ही तरह का चलना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। रोजाना ४५ मिनट में लगभग ५ किलोमीटर टहलना अति उत्तम स्वास्थ्यवर्द्धक होता है, अनेक रोगों से बचाव करता है, टहलने से मुख्यत: कूल्हों, पेट के निचले हिस्से, कमर इत्यादि अंगों का व्यायाम होता है।

टहलने से उच्च रक्तताप, हृदय, धमनी रोगों (एंजाइना, हार्ट अटैक), मधुमेह, जोड़ों, हड्डियों के रोगों इत्यादि से बचाव होता है। रोगग्रस्त होने के बाद इन रोगों पर नियंत्रण आसान हो जाता है। रक्त कोलेस्ट्राल वसा स्तर कम हो जाते हैं। वजन पर नियंत्रण आसान हो जाता है, नियमित घूमने से हड्डियां मजबूत होती हैं, जोड़ लचीले बने रहते हैं। प्रौढ़ावस्था में आस्टियो पोरोसिस की संभावना कम हो जाती है, जो कमर दर्द, हड्डियों के टूटने, अपंगता का महत्वपूर्ण कारण होता है, शोधों से ज्ञात हुआ है कि नियमित रुप से तेज टहलने वाले व्यक्तियों में अस्थियों की सघनता बढ़ जाती है, इनमें कूल्हे की हड्डियों के टूटने का खतरा कम हो जाता

है, पीठ कमर दर्द से भी बचाव होता है। घूमने वालों में हृदय धमनी में कोलेस्ट्राल जमा होने के कारण धमनियों के संकरे, कम लचीले होने की एथ्रोस्कलेरोसिस और रक्त का थक्का बनने का खतरा कम हो जाता है, जो कि हार्ट अटैक का मूल कारण होता है, तेज गति से नियमित टहलना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है, टहलने व सक्रिय रहने से दुबारा हृदयघात की संभावना कम रहती है।

-डा. जे. एल. अग्रवाल

त्यागमूर्ति, वैदिक ऋषि, दानवीर महर्षि दधीचि
जन्म पर्व पर कोटी-कोटी नमन!

ASHOK AMARCHAND BHEDA

Mob. : 09790784397

**15, Theradi Street Velachery
Chennai, Tamilnadu, Bharat- 600042**

भारत को 'BHARAT' ही बोलेंगे

जय भारत! जय-जय राजस्थान

Remove INDIA Name From The Constitution

देवेंद्र शास्त्री
गुजरात दाधीच परिषद
जोधपुर निवासी-अहमदाबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२४५०७४९४

देवेंद्र जी 'महर्षि दधीचि' जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'भारत' पवित्रता की भूमि है, इस पवित्र भूमि पर बड़े-बड़े ऋषि मुनियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने समाज कल्याण के लिए कई कार्य किए हैं इनमें से एक हुए महादानी 'महर्षि दधीचि', जिन्होंने समाज और मानव कल्याण हेतु अपनी अस्थियां देवताओं को दान कर दिया, सबसे पहले 'जीते जी देहदानी' कहलाएं, जिन्हें आज संपूर्ण विश्व श्रद्धा से नमन करता है, हमें गर्व है कि हम उन्ही के वंशज हैं, आज हम किसी न किसी रूप में उनके आदर्शों को अपनाए हुए हैं, देहदान, अंगदान, रक्तदान जैसे कार्यों की ओर अग्रसर हो रहे हैं, यह हमारे लिए गौरव की बात है कि गांधी आश्रम के बगल में ही 'महर्षी दधिचि आश्रम' भी बना हुआ है और यहां साबरमती नदी पर 'दधीचि ऋषि सेतू' भी बना हुआ है। अहमदाबाद में महर्षि दधीचि जयंती के अवसर पर विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम किए जाते हैं, शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया जाता है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर रहती है,ज्यादातर युवा पीढ़ी समाज और आपसी मतभेदों एवं और नौकरी, व्यवसाय में व्यस्तता रहने से दूरी बनाएं रखते हैं और बाकी कुछ है जो धार्मिक और सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़ भाग लेते हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

देवेंद्र जी मूलतः राजस्थान स्थित 'जोधपुर' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, १९८२ से आप 'अहमदाबाद' में बसे हुए हैं और एक बड़ी कंपनी में कार्यरत रहे, वर्तमान में सेवानिवृत्त हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। गुजरात दाधीच परिषद के अध्यक्ष हैं, अहमदाबाद के सिविल अस्पताल के अंगदान संस्था और इंदौर की देहदान समिति से जुड़े हैं, रेड क्रॉस सोसाइटी में भी संलग्न है, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!-

मेरा राजस्थान

हरिप्रसाद दाधीच
संस्थापक महर्षि दधीचि सेवा समिति सांडवा
सांडवा निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९८६१६७५९६

हरिप्रसाद जी 'महर्षि दधीचि' जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महर्षि दधीचि' हमारे कुल श्रेष्ठ हैं, जिन्होंने सर्वप्रथम देहदान देकर मानव कल्याण के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया, आज भी विश्व में उनके जैसा महादानी ना कोई हुआ है ना होगा, उनकी महिमा संपूर्ण देश में गाई जाती है, उनकी जयंती के अवसर पर विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यक्रम होते रहते हैं, हम उनके जैसा दानी तो नहीं बन सकते पर क्रियाकलापों व सहयोग के माध्यम से हम दान की महिमा का प्रचार प्रसार कर सकते हैं, जिससे 'महर्षि दधीचि' जी के आदर्शों का पालन किया जा सके।

आज की युवा पीढ़ी भी अपने धर्म और समाज के प्रति जागरुक है, वे भी विभिन्न धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी रहते हैं, 'महर्षि दधीचि' जयंती के अवसर पर युवाओं का भी योगदान बढ़-चढ़ कर रहता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का तो एक नाम और एक पहचान ही रहना चाहिए 'भारत'!

हरिप्रसाद जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सांडवा' के निवासी हैं, आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, तत्पश्चात उच्च शिक्षा भारत के अन्य क्षेत्रों में संपन्न हुई है, एकाउंट्स फाइनेंस से जुड़े हैं, पिछले २८ सालों से आप 'बेंगलुरु' में बसे हुए हैं और समाज कार्य में जुड़े हैं। 'सांडवा' में आपके द्वारा महर्षि दधीचि सेवा समिति का गठन किया गया है, जिसके माध्यम से 'महर्षि दधीचि' जयंती व अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। बैंगलोर दाधीच समाज से भी जुड़े हैं, आपके पुत्र आनंद जी कवि हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

नथमल पाटोदिया
अध्यक्ष कर्नाटक महर्षि दाधीच परिषद बेंगलुरु
नागौर निवासी-बैंगलोर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९६८६४६८६३७

नथमल जी 'महर्षि दधीचि' जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हम महादानी महर्षि दधीचि जी के वंशज हैं, जिन्होंने मानव कल्याण समाज उत्थान के लिए अपने शरीर तक का दान कर दिया, हम उनकी तरह तो महादानी तो नहीं बन सकते, पर रक्तदान, अंगदान व अन्य सामाजिक, धार्मिक कार्य के माध्यम से उनके आदर्शों व सिद्धांतों को जरुर अपना सकते हैं, हमारे यहां 'महर्षि दधीचि' जयंती पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, जिसमें कलश यात्रा, मंगल पाठ व धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

आज की युवा पीढ़ी भी 'महर्षि दधीचि' जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी होती हैं, हमारे यहां महर्षि दधीचि युवा मंडल, महिला मंडल व अन्य कई संस्थाएं कार्यरत हैं, जिनके माध्यम से 'महर्षि दधीचि' जी के आदर्शों को आगे बढ़ने का प्रयास किया जा रहा है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत', इंडिया तो अंग्रेजों का दिया नाम है, हमारे देश की वास्तविक पहचान 'भारत' से थी और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

नथमल जी मूलतः राजस्थान स्थित नागौर के निवासी हैं। आपका जन्म सम्पूर्ण व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप 'बेंगलुरु' में बसे हैं और रेडीमेड कपड़ों के शोरूम व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सनातन धर्म, धर्म शास्त्रों तथा धर्म स्थलों को आगे बढाने की महती आवश्यकता

धर्म में लोगों की आस्था काफी बढ़ी है, पिछले २ दशकों में धर्म का काफी विस्तार हुआ है, प्रचार-प्रसार भी काफी हुआ है। संचार साधनों के विस्तार ने धर्म को जन-जन तक हर जगह पहुंचाया है और आस्तिकता को भी बढाया। नये-नये प्रकाशन समीक्षाएं व टीकाएं विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रकाशित की गयी, जिससे धर्म शास्त्रों को पढ़ने व समझने में सरलता बनी, सौ से ज्यादा धार्मिक चेनल हो गये, इतने ही कथाकार व वक्ता भी हो गए, यह सभी धर्मों व भाषाओं में हुआ है अत: सभी धर्मों का, सभी भाषाओं में व्यापक विस्तार विश्व भर में हुआ है। वेदों का भी हिन्दी भाष्य काफी प्रचारित हो रहा है, धार्मिक कथाओं का आयोजन गांवों तक होने लगा है, जिसके चलते सामान्य अशिक्षित नागरिक भी इस धर्म यात्रा में जुड़े हैं। धार्मिक चेनल विश्व भर में देखे जाते हैं। कलियुग के ५११८ वर्ष गुजर गये, कलियुग के बढते प्रभाव के साथ धर्म का प्रचार-प्रसार बहुत आवश्यक है, अभी तक हम रामचरित मानस व मद्भागवत पर ही ज्यादा आश्रीत हैं। कथाएं व आयोजन इन्हीं दो ग्रन्थों पर होता है, हिन्दु शास्त्रों का विशाल भंडार है। वेद-वेदांग, पुराण-उपनिषद, स्मृतियां, सौ करोड़ रामायण तथा सैकड़ों गीताएं उपलब्ध हैं, जिनमें ज्ञान का अपार भंडार है। वाल्मीकी रामायण तथा अष्टवक्र गीता, रामगीता, सीतागीता आदि भी उपलब्ध हैं। वेद को देववाणी कहा गया है, अन्य ग्रंथों में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण जानकारीयॉ हैं, जिससे लौकिक व परलौकीक ज्ञान प्राप्त कर जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है, इन ग्रंथों पर टीकाएँ भी कम हैं, अत: जरूरत आधारभूत ग्रंथों पर फोकस कर इनका प्रचार-प्रसार करें, इन ग्रंथों पर उत्सव आयोजित किये जाने चाहिए ताकि जनता जनार्धन को हमारे आधारभूत ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त हो सके, धर्म को आगे बढाने में इन ग्रंथों की भूमिका अहम है, अत: इनकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इनका प्रचार-प्रसार भी विभिन्न साधनों द्वारा किया जाना चाहिए, ग्रंथों का सार सरल भाषा में छोटी-छोटी पुस्तिका के रूप में जनता को उपलब्ध कराया जाना चाहिए, इसी तरह भारत में विश्व प्रसिद्ध धार्मिक स्थल हैं - अयोध्या, वृंदावन, चित्रकूट, रामेश्वरम, द्वारका, अमरनाथ, वैष्णोदेवी, दादीधाम आदि जिनको तीर्थस्थान का विशेष दर्ज़ा देकर विश्वस्तरीय सुविधाओं से सुसज्जीत करना चाहिए तथा विश्व के सभी स्थानों को हवाई मार्ग से जोड़ना चाहिए ताकि विश्वभर के लोग इन तीर्थ स्थानों का दर्शन कर सके। पंचतारिका सुविधाएं -होटल, यातायात, संचार साधन, चिकित्सा आदि की सर्वोच्च व्यवस्था होनी चाहिए ताकि भक्तजन यहॉ आने को तत्पर हों, इससे धार्मीक पर्यटन बढेगा तथा रोजगार के अवसर भी बढेंगे, सरकार को राजस्व भी मिलेगा, इन सभी पहलुओं पर नये तरीके से सोचने की जरूरत है तथा भारत में इन्हें नूतन स्थान प्रदान कर आस्था व धर्म का दीप उज्ज्वलीत करने की भी जरूरत है।

- श्री विश्वशांति टेकड़ीवाल परिवार

समस्त राजस्थानी समाज की एकमात्र पत्रिका
'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को विश्वनाथ भरतिया परिवार
की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं!

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए अब तो इंडिया नहीं

भगवती दधिमती का प्राकट्य एवं देवी चमत्कार

(इस लेख में संदर्भ श्रीमद् भागवत, महाभारत, विराट पुराण, दधिमथी पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण एवं कल्याण आदि से लिये गये है)

महर्षि दधीचि की पावन भगिनी महामाया भगवती दधिमथी भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में बसे लाखों दाधीच (दाहिमा) ब्राह्मणों की कुलदेवी हैं। दाधीच ब्राह्मणों का कोई धार्मिक संस्कार बिना माँ दधिमथी की पूजा अर्चना में पूर्ण नहीं माना जाता। महामाया भगवती दधिमथी का नागौर जिले के गोठ-मांगलोद में स्थित मन्दिर दाधीच समाज केन्द्र है, अपनी मनौतियाँ, बच्चों का मुंडन संस्कार, जात-जडुले हेतु दोनों नवरात्रों सहित वर्ष भर श्रध्दालु यहाँ आते हैं।

शेषशायी भगवान विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्माजी प्रकट हुए, उनके ही तपोबल से उत्पन्न दस मानस पुत्रों में महर्षि अथर्वा, जो कि अथर्व वेद के प्रणेता माने जाते हैं, उन्होंने जल में बिना किसी अरणि मंथन से अग्नि का प्रादुर्भाव कर वैज्ञानिक ढंग से प्राणभूम ऊर्जा (हायड्रो पावर) का आविष्कार किया, यह मानव विकास के इतिहास में उनका प्रथम वैज्ञानिक योगदान था। वे परम तेजस्वी एवं भगवान शंकर के परम भक्त थे, उनका विवाह कर्दम ऋषि की विदुषी पुत्री शांता से हुआ, वे प्रजापति कहलाये।

भगवती का अवतरण

महर्षि अथर्वा की धर्मपरायण पत्नी शांता ने भगवती लक्ष्मी की तपस्या की। भगवती लक्ष्मी ने वरदान देते हुए कहा कि दैत्यराज विकटासुर के वध करने हेतु मैं तुम्हारे यहां पुत्री के रूप में जन्म लूंगी और देवताओं को अभय प्रदान करूंगी, इसके पश्चात भगवती लक्ष्मी ने शान्ता की पुत्री के रूप में जन्म लिया, जिसका नाम नारायणी हुआ। सृष्टि के प्रारम्भ से ही सुर और असुर शक्ति का अस्तित्व रहा है। आध्यात्मिकता, नैतिकता सदाचार एवं समर्पण की भावना देवशक्ति एवं भौतिक बल के माध्यम से सभी को अपने अधीन करने की लालसा, अनाचार, अमैत्री, अत्याचार आदि आसुरी शक्ति के द्योतक हैं। उस समय आसुरी शक्ति के प्रतिनिधि दैत्यराज विकटासुर ने कठोर तपस्या करके ब्रह्माजी से अमरता का वरदान मांगा किन्तु मृत्यु तो अवश्यम्भावी है। अत:स्त्री (जिसे वह अबला मानता था) को छोडकर अजेयता का वरदान ब्रह्माजी ने दिया।

वरदान पाकर दैत्यराज का आसुरी मनोबल बढ गया, उसने स्वर्ग, पाताल, नागलोक आदि को जीतकर देवताओं को राजश्री से हीन कर दिया, आसुरी एवं मायावी शक्ति के माध्यम से ब्रह्माजी से ब्रह्म शक्ति भी छीन ली जिससे सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया अवरूध्द हो गई। दैत्यगुरू शुक्राचार्यजी की कृपा से उसने समुद्र में चन्द्रावती नामक विशाल नगरी का निर्माण करवाया और उसमें रहने लगा। योजनाबध्द तरीके से पृथ्वी और देवलोक में वह अत्याचार करने लगा। देव और ऋषि संस्कृति में विश्वास करने वालों का विश्वास डगमगा गया, सभी ओर त्राही-त्राही मच गई प्रतिकार की क्षमता नष्ट हो गई। **शेष पृष्ठ ३६ पर...**

परहित हेतु किया त्याग
तभी महर्षि दधीचि का है अमर इतिहास
महर्षि दधीचि जयंती पर सादर-वंदन

Nathmal Pathodia
Mob: 9686468637:7676931470

Mahalaxmi Creations

Dealers in Readymade Garments,
Kids wear, Ladies Tops, Gown,
Ghagra & Kurties

We take online orders

#799, Mohan Building, Chickpet,
Bangalore-560-053

पृष्ठ ३५ से... **विकटासुर का वध**

दैत्यराज विकटासुर के अत्याचारों से त्रस्त सभी देवगण भगवान विष्णु की शरण में गये। भगवान विष्णु ने देवताओं को आश्वस्त करते हुए बताया कि विकटासुर का वधकर संसार में पुन: देव संस्कृति को स्थापित करने एवं समस्त प्राणियों को अभय प्रदान के लिए योगमाया महालक्ष्मी भगवती नारायणी के रूप में महर्षि अथर्वा के घर में प्रकट हुई है, वही इस दैत्य का नाश करेगी, आप वहीं जावें। भगवान विष्णु के निर्देश पर सभी देवगणों ने महर्षि अथर्वा के आश्रम पर पहुँचकर भगवती नारायणी के अर्चना प्रार्थना की। देवताओं की प्रार्थना से प्रसन्न होकर भगवती ने उन्हें अभय का वरदान दिया, स्वयं अथर्वानन्दिनी ने सभी दिव्यास्त्रों को धारण कर सिंह पर आरूढ होकर सप्त सिन्धुओं का मंथन किया। विकटासुर को अपने वरदान का स्मरण आते ही (मेरी मृत्यु सिर्फ स्त्री से ही हो सकती है) देवी के भय से दधि सागर में जाकर छिप गया, इस पर भगवती ने दधि सागर का मंथन कर माघ शुक्ला अष्टमी कर माघ शुक्ला अष्टमी को संध्याकाल में विकटासुर का वध किया, यह तिथि 'जयाष्टमी' के नाम से विख्यात है।

दधिमथी का नामकरण

दैत्यराज विकटासुर के वध से देवताओं की खोई हुई शक्ति पुन: प्राप्त हुई। ब्रह्माजी का सृष्टि सृजन कार्य सामान्य हुआ। ब्रह्माजी ने दधि सागर का मंथन कर विकटासुर का वध करने वाली अथर्वानन्दिनी का नाम 'दधिमथी' रखा तथा महर्षि अथर्वा को पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया। सृष्टिकर्ता ने भगवती दधिमथी को अपने भाई के वंश की रक्षा करते हुए उनकी कुलदेवी होने का आशीर्वाद दिया।

पिप्पलाद का पालन

कालांतर में अथर्वा पुत्र महर्षि दधीचि द्वारा विश्व कल्याण एवं देश धर्म की रक्षा हेतु दैत्यराज वृत्रासुर के वध के लिए अपनी अस्थियाँ प्रदान कर देने के बाद दधीचि पत्नी वेदवती, जो कि गर्भवती थी, सती होने को पत्पर हुई। तब देवताओं ने ऋषि पत्नी को स्मरण कराया कि आपके गर्भ में जो ऋषि का तेज विद्यमान है, वह रूद्रावतार है। पहले आप उसे उत्पन्न करें इस पर ऋषि पत्नी ने शल्य-क्रिया द्वारा अपना गर्भ निकालकर आश्रम में ऋषि द्वारा स्थापित अश्वत्थ वृक्ष (पीपल का पेड) को सौंपते हुए गर्भस्थ बालक की रक्षा की एवं भगवती दधिमथी से प्रार्थना की, कि आप ही हमारी कुल देवी हैं। कुलदेवी दधिमथी के सानिध्य में पीपल वृक्ष के नीचे पलने के कारण महर्षि दधीचि के पुत्र का नाम पिप्पलाद हुआ। ब्रह्माण्ड पुराण के विश्वोत्पत्ति प्रकरण में निम्न श्लोक द्वारा इसकी पुष्टी की गई है।

श्री मन्नारायणाद ब्रह्मा ब्रह्मोणोथर्व विन्मुनि:।
दध्यडथर्वणा तस्मात् पिप्पलादो महामुनि:।।

पिप्पलाद एक तपोनिष्ठ महर्षि हुए, उनका विवाह चक्रवर्ती राजा अनरण्य की पुत्री पद्-मा से हुआ, उनके १२ तेजस्वी पुत्र हुए (वृहद्वत्स, गौतम, भार्गव, भारद्वाज, कौच्छस, कश्यप, शाण्डिल्य, अत्रि, पराशर, कपिल, गर्ग और लघुवत्स (मम्म) जो बड़े विद्वान और तपस्वी हुए, इन्होंने उत्कृष्ट सिध्दियां प्राप्त की। वृहद्वत्स और गौतम का विवाह अंगिरा की कन्याओं एवं बाकी दस ऋषियों का विवाह देव शर्मा की कन्याओं से हुआ, इन बारह ऋषियों के १४४ पुत्र हुए वे भी बड़े विद्वान और तपस्वी हुए। कुलदेवी भगवती दधिमथी की आराधना से इनका प्रभाव बढता ही गया।

कपालपीठ का प्राकट्य एवं राजा मान्धाता का यज्ञ

दक्ष प्रजापति द्वारा अपने पति का अपमान एवं अपने पिता द्वारा शिव निन्दा की ज्वाला से पीड़ित सती ने सशरीर यज्ञ कुण्ड में प्रवेश किया, तब आशुतोष शंकर ने सती के शव को अपने कंधे पर रखकर भ्रमण किया, जहां-जहां सती के शरीर के अवशेष गिरे वे स्थान पवित्र शक्तिपीठ कहलाये। भगवती सती का कपाल पुष्कर क्षेत्र से ३२ कोस उत्तर में गोड-मांगलोद के दो गांवों के बीच गिरा जो कपाल सिध्दपीठ के नाम से प्रसिध्द है।

त्रेता युग में सुर्यवंशी अयोध्यापति राजा मान्धाता का पुराण प्रसिध्द देवेशी (दधिमथी) यज्ञ महर्षि वशिष्ठ की आज्ञा से इसी कपालपीठ क्षेत्र में हुआ, उसके आचार्य महर्षि पिप्पलाद के १४४ पौत्र थे। माघ शुक्ला सप्तमी को पूर्णाहुति के अवसर पर देवी दधिमथी का प्राकट्य हुआ। देवी ने यजमान एवं आचार्यों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए राजा मान्धाता को कपालपीठ पर मन्दिर निर्माण का आदेश दिया। तत्काल यज्ञकुण्ड को जलकुण्ड में परिवर्तित करते हुए भगवती महामाया ने आशीर्वाद दिया कि इस जलकुण्ड में त्रिवेणी (गंगा, जमुना, और सरस्वती) का निवास रहेगा, इसमें स्नान करने एवं कपालपीठ का दर्शन पूजन करने वाले सभी पापों से मुक्त होंगे। दाधीच वंश की कुलदेवी होने के नाते मेरी आराधना करने पर दाधीच कुल बुध्दिमान, यशस्वी एवं कुलवंत होंगे, मैं उनकी सदैव रक्षा करूंगी, जो भी व्यक्ति मेरी मनौती करेगा उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। राजा मान्धाता ने कपालपीठ पर मंदिर का निर्माण करवाया, तभी से यह कपालपीठ एक पवित्र तीर्थस्थल माना जाता है।

श्रुतियों के अनुसार राजा मान्धाता द्वारा निर्मित यह मंदिर अनेक वर्षों तक गुप्त रहा, बाद में एक दिन इसी स्थान पर गाय चरा रहे ग्वाले को आकाशवाणी से महामाया दधिमथी ने संकेत दिया कि मैं भूमि से पुन: प्रकट हो रही हूँ, अगर गायें भडक जावें तो भयभीत मत होना, जब देवी प्रकट हो रही थी उसी समय सिंह की गर्जना सुनकर गायें भडक उठी। ग्वाला देवी की बात भूल कर चिल्ला उठा जिसके फलस्वरूप देवी का पुरा स्वरूप न निकलकर मात्र कपाल का ही प्राकट्य हुआ।

ऋषियों एवं देवों द्वारा पूजन के दिन

पुष्कर के वासी दिव्य ऋषिगण वारानुक्रम से रविवार को महर्षि वशिष्ठ, सोमवार को वामदेव, मंगलवार को कपिल, बुधवार को अगस्त्य, गुरूवार को अथर्वा, शुक्रवार को अंगिरा, शनिवार को अत्रि, नवरात्रि में मार्कण्डेय, महारात्रि दीपावली को भगवान विष्णु मोहरात्रि जन्माष्टमी को ब्रह्माजी एवं कालरात्रि शिवरात्री को भगवान शिव कपालपीठ पर आकर भगवती दधिमथी की पूजा अर्चना करते हैं। द्वापर में पाण्डव अज्ञातवास काल में कपालपीठ के दर्शन करते हुए पुष्कर तीर्थ गये, इसका उल्लेख पुरानों में मिलता है।

मंदिर का पुरातात्विक महत्व

मंदिर का जिर्णोध्दार एवं विस्तार मंदिर से प्राप्त एक शिलालेख के आधार पर सम्वत् २८९ विक्रम सम्वत् ६०८ में चौदह दाधीच ब्राह्मणों द्वारा २०२४ तत्कालीन स्वर्ण मुद्राओं से किया गया था, इसका गर्भग्रह एवं सभा मण्डप ३८ स्तभों पर निर्मित है जिसमें एक अधर स्तम्भ भगवती का चमत्कार ही है, इस मंदिर में उपलब्ध हुए शिलालेखों के आधार पर यह उत्तर भारत के प्राचीनतम मंदिरों में से है। पुरातत्ववेताओं एवं इतिहासकारों ने इसे २००० वर्ष प्राचीन माना है। मंदिर में प्राप्त शिलालेख का विवरण इपेग्राफी ऑफ इंडिया पार्ट ३ में लिखा है जो भारत के प्रमुख पुरातत्व संग्राहलयों में उपलब्ध है, मंदिर में सम्वत् ४८ का एक देव प्रतिमा पर लेख भी विद्यमान है। पुराणों में इसे कुशा क्षेत्र कहा है तथा इस क्षेत्र में भगवती दधिमथी की अहैतुकी कृपा से जिप्सम खनिज का प्रचुर भण्डार है।

भगवती दधिमथी के चमत्कार

सन् १२३१ में विदेशी क्रूर धर्मान्ध आक्रमणकारी **शेष पृष्ठ ३७ पर...**

पृष्ठ ३६ से... मोहम्मद गजनवी भारत में मंदिर ध्वंस करने के अपने अभियान के अन्तर्गत गोठ-मांगलोद के मंदिर और कपालपीठ को तोड़ने आया था, उस समय देवी चमत्कार से काले भंवरों ने उसके सैनिकों पर भयानक आक्रमण कर दिया। मंदिर तोड़ने में असफल होने के कारण उसने कपालपीठ पर एक शिला रख कर उसको ढक दिया। सम्वत् १९०३ में ब्रह्मचारी विष्णुदासजी के वहां पहुँचने पर उस शिला के चमत्कारिक ढंग से ५ टुकडो में विखंडित होने का विवरण मंदिर में लगे शिलालेख में अंकित है।

दाधीच कुलभूषण सिध्द ब्रह्मचारी बुढादेवल (मेवाड़) निवासी श्री विष्णुदासजी महाराज ने कुलदेवी दधिमथी के कपालपीठ को अपनी तपस्या स्थली बनाया, उन्होंने वहां अनेकों गायत्री के पुरश्चरण किये। भगवती की आज्ञा से वे उदयपुर गये, मार्ग में लकडी काटते एक बालक को देखकर उसके उदयपुर का राणा बनने की भविष्यवाणी की। बालक ने अपनी निर्धनता की बात बताई, इस पर ब्रह्मचारीजी ने कहा कि भगवती दधिमथी की कृपा से उदयपुर का राजतिलक तेरे ललाट पर ही लगेगा, तू उदयपुर जा, इधर उदयपुर की राजगद्दी का लेकर दो पक्षों के बीच संघर्ष चल रहा था। प्रजा ने निर्णय किया कि ये दोनों पक्ष ही इस गद्दी के योग्य नहीं हैं, प्रात: जो भी पहला व्यक्ति जंगल में मिले, उसे ही गद्दी पर बैठा दिया जाये। भगवती के चमत्कार से वही निर्धन बालक जंगल में प्रजाजनों को मिला, उसका नाम रामस्वरूपसिंह था, प्रजाजनों ने उस बालक को उदयपुर के महाराणा के रूप में राजतिलक किया, जिसका नाम स्वरूपसिंह रखा गया। कालांतर में भगवती ने महाराणा को अनेकों परचे दिये, उनको पुत्र की प्राप्ति भी हुई।

मंदिर में लगे सम्वत् १९०८ के शिलालेख के अनुसार ब्रह्मचारी विष्णुदासजी महाराज की आज्ञा से महाराणा स्वरूपसिंह जी द्वारा ब्रह्मचारीजी के पुत्र के निर्देशक में मंदिर के गर्भगृह एवं सभामण्डप के बाहर के चौक, तिबारीयों, प्रकोष्ठ दरवाजे, चारदिवारी, यात्री निवास, बावडी, शिवमंदिर आदि का निर्माण एवं कुण्ड का
जीर्णोध्दार हुआ।

जोधपुर की महारानी की रोगमुक्ति भी भगवती की मनौती से चमत्कारी ढंग से हुई जिस पर जोधपुर राजवंश ने मंदिर विकास में अपना योगदान दिया। राणाजी के प्रधान शेरसिंहजी, जैसलमेर के पटवा जोरावरमल जी ने भी मंदिर विकास में अपना सहयोग दिया।

मंदिर में नवरात्रियों की सप्तमी एवं अष्टमी को श्रध्दालु भक्तजनों द्वारा 'श्री सुक्तम' के मंत्रों से दुग्धाभिषेक होता है, चाहे जितने दुध से अभिषेक किया जावे, भगवती का चमत्कार है कि वह कुंडी से बाहर छलकता नहीं है।

एक बार इस कपालपीठ क्षेत्र में भंयकर बाढ से चारों ओर का क्षेत्र जलप्ल-ाावित हो गया तथा मंदिर की चारदिवारी के बाहर अथाह जल था, किन्तु गर्भगृह में बाढ का पानी नहीं पहुँच पाया तथा ऐसी बाढ में पुजारीगण लोहे के कड़ाव को नाव की तरह उपयोग में लेते हुए भगवती की नियमित पूजा अर्चना के लिए मंदिर तक पहुँचते थे, यह भी एक कौतुहलपूर्ण चमत्कार है, इस प्रकार भगवती के अनेकों चमत्कार लोगों ने प्रत्यक्ष देखे हैं। भगवती दधिमथी के सम्बंध में मान्यता है कि जो यहां दुग्धाभिषेक करवाता है, घी की अखण्ड जोत (दीपक) स्थापित करता है, मंदिर में अपनी मनौति के लिए नारियल, ध्वजा और चुनड़ी अर्पण करता है, चूरमे का नैवेद्य चढाता है, उसकी मनोकामना निश्चित पूर्ण होती है। दाधीच समाज के लोग तो अनिर्वाय रूप से यहाँ आते ही हैं वरन् इस क्षेत्र के तथा दूर-दूर के अन्य समाज एवं सम्प्रदाय के श्रध्दालु भी मनोकामना की पूर्ति हेतु देवी के दर्शनार्थ बारह मास आते रहते हैं तथा भगवती को अपनी इष्टदेवी के रूप में पूजते हैं।

दोनों नवरात्रियों में विशाल मेले भरते हैं, इस अवसर का तो आनन्द ही निराला है। दाधीच समाज के लोग तो सप्तमी के पूर्व ही आ जाते हैं। दूर-दूर से आये बंधु आपसी परिचय, सगाई, सम्बन्धों की चर्चाओं के साथ-साथ समाज एवं मंदिर विकास की योजना बनाते हैं। अनेकों तपस्वी पूरे नवरात्रा यहां उपासना करते हैं। मंदिर एवं मेले की सारी व्यवस्था दाधीच समाज के रजिस्टर्ड पन्यास संस्थाओं द्वारा की जाती है।

यह स्थान नागौर जिले में जायल तहसील के अर्न्तगत गोठ-मांगलोद माताजी के नाम से विख्यात है, यहाँ पहुँचने के लिए निकटस्थ रेल्वे स्टेशन नागौर, डीडवाणा और डेगाना है, यहाँ से माताजी एवं जायल के लिए बसें मिलती है, यह जायल से १० कि.मी. है।

देश का दाधीच समाज एवं इस क्षेत्र के श्रध्दालु नागरिक भी इसके विकास हेतु सक्रिय हुए जिसके परिणामस्वरूप मंदिर में नव-निर्माण हुआ है, निज मन्दिर, शिव परिवार मन्दिर (शिवालय) व हनुमान मंदिर के अतिरिक्त उत्तरी प्रवेश द्वार का जीर्णोध्दार हुआ है। बगीचा चोक में नये कमरों का निर्माण होने से भव्यता आयी है और सुविधाएं भी बढी है लेकिन यह तो अभी आरम्भ ही हैं, अभी बहुत कुछ होना शेष है। श्रध्दालुओं से अपेक्षा है कि वे इस शक्तिपीठ के भौतिक विकास के साथ ही आध्यात्मिक एवं पुरातत्व केन्द्र के रूप में भी इसके विकास की दिशा में प्रगति में प्रयासरत रहे।

'दधीचि जयंती' सिखलाये परहित का आदर्श,
परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष
महर्षि दधीचि जन्म पर्व पर शुभकामनाएं

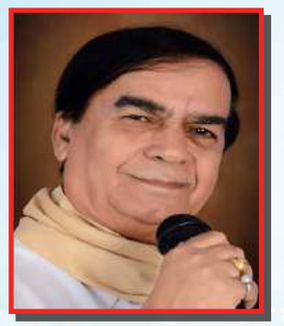

Om Vyas
भ्रमणध्वनि: 09820151971

B-303, DLH Mitra, Pragati Nagar,
M.G. Road, Tilak Road, No.6, Goregaon West,
Mumbai, Maharashtra, Bharat -400062
दूरध्वनि: 022-28721082
अणुडाक: omhvyas@yahoo.com
अन्तरताना: www.omvyas.com

क्षमा वीरस्य भूषणम

क्षमा नयन का नीर है, हरे जो भव की पीर
घाव भरे कटुवाणी का, शीतल करे शरीर

'पर्युषण' का अर्थ है- परि-उपसर्ग, वसधातु और अन प्रत्यय, इन तीनों के संयोग से 'पर्युषण' शब्द निष्पन्न हुआ है।

परि-समन्तात् समग्रतया उषणं वसनं निवास करणं

अर्थात् सम्पूर्ण रुप से निवास करना, विभाव से हटकर स्वभाव में रमण करना। शास्त्रों में पर्व एक ही दिन का स्वीकृत हुआ है, बाकी दिन तो पर्व की सम्यक आराधना की तैयारी के लिए पूर्वाचार्यों के द्वारा नियत किए गये हैं, अत: वे भी उपेक्षनीय नहीं है, जैसे बलवान पर धावा बोलने के लिए बल का संचय करना आवश्यक है उसी प्रकार रागादि शत्रुओं की घात के लिए सात दिन आध्यात्मिक बल संग्रह को समझना चाहिए, यह पर्व मात्र जैन सन्स्कृति का ही नहीं, मानव संस्कृति पर्व है।

एक संवत्सर यानि एक वर्ष के बाद आने वाले महानतम दिन को व्यवहार से 'संवत्सरी' कह दिया गया है, साथ ही इस पर्व का नाम ''पर्युषण'' भी है। तीर्थंकर महावीर ने चातुर्मास के ५० दिन बीतने पर और ७० दिन बाकी रहने पर 'पर्युषण' पर्व की आराधना की थी, ऐसा समवायांग में उल्लेख है। तिथियों की घट-बढ़ के कारण कभी-कभी इधर ४९ दिन और उधर ७१ दिन हो जाते हैं।

'पर्युषण' पर्व के १८ दिनों में जैन लोग अधिकतर सांसारिक कार्यों से निवृत रहते हैं, इस पर्व में प्रात:कालीन प्रवचन, श्रवण, स्वाध्याय, प्रेक्षाध्यान, जप, द्रव्यों का परिमाण, रात्रि भोजन का परित्याग, ब्रह्मचर्य का पालन, अणुव्रत साधना, सामायिक, मौन, सामूहिक प्रतिक्रमण, पौषध साधना आदि करते हैं, साथ ही तीर्थंकर महावीर का जीवन दर्शन पढ़ा जाता है, ८ वें व १०वें दिन संवत्सरी-दस लक्षण महापर्व यथाशक्ति उपवास एवम् पोषध कर, सभी धर्माराधना करते हैं, सभी से क्षमायाचना, खमत खामणा-मिच्छामी दुक्कड़म-उत्तम क्षमा' करते हैं।

'क्षमा' का अर्थ है सहना, सहने को अपना धर्म मानकर विरोधी भाव को सहना 'क्षमा' है, 'क्षमा' शक्तिशाली का अस्त्र है। अपनी शक्ति के उन्माद पर नियन्त्रण रखना 'क्षमा' है, इसके द्वारा व्यक्ति वर्ष भर में एकत्रित तनाव से मुक्त हो जाता है, शान्ति उसे मिलती है जिसके हृदय में 'क्षमा' लहराये, दूसरों की कमजोरियों, अपराधों और भूलों को भूला सके, वही आनन्द का स्त्रोत बन सकता है, अपने अपराधों के लिए 'क्षमा' मांगने में जो न सकुचाये, वह महान है। शान्तिदूत वही है, जो अपनी भूलों से उत्पन्न वेदना को भुला देने का नम्र अनुरोध करे। गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी ने कहा था क्षमाशील वह होता है जो अतीत को विस्मृत करता है, वर्तमान की चिन्तनधारा बदलता है और भविष्य में किसी प्रकार की क्षलना न करने का संकल्प करता है, 'क्षमा' वही व्यक्ति कर सकता है, जिसका हृदय विशाल हो जिसमें सहज, सरलता हो और जीवन को अभिभूत करनेवाली मृदुता हो''।

एक बार चीन के सम्राट मगफू को सूचना मिली की उसके राज्य में विद्रोह हो गया है, सम्राट ने प्रतिज्ञा की कि वह विद्रोहियों को समुल नष्ट कर देगा। सम्राट प्रतिज्ञा करके सेना सहित विद्रोहग्रस्त क्षेत्र में पहुँचा। सम्राट के विशाल सेना सहित आने की सूचना पाकर विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया और सम्राट ने भी सभी को 'क्षमा' कर दिया, यह देखकर सम्राट के वफादार सैनिकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक सेनापति ने साहस करके पूछा- ''महाराज आपकी प्रतिज्ञा का क्या हुआ?'' सम्राट बोला ''मैं अपनी प्रतिज्ञा पर अटल हूँ, मैंने सारे विद्रोहियों को नष्ट कर दिया है, अब वो मेरे शत्रु नहीं रहे, बल्कि मेरे मित्र बन गये हैं।'' यह है दया-क्षमा-शालीनतायुक्त व्यवहार का सुपरिणाम। तीर्थंकर महावीर ने कहा है कि ''कोहो पिईयपणा सई'' क्रोध प्रीति का नाश करता है। क्रोध पर विजय पाने के लिए एक मात्र उपाय 'क्षमा' है। 'क्षमा' से ही जीव को मानसिक शान्ति मिलती है। 'क्षमापना' से वैमनस्य दूर हो जाता है, मन हल्का हो जाता है, हमारी वर्तमान जीवन शैली सुख-सुविधा एवम् स्वार्थ भरी है, यही यह पर्व है जिससे हटकर, आत्म दर्शन याने बाहर की नहीं भीतर की यात्रा के लिए प्रेरीत करता है तो समस्त 'जिनागम' के प्रबुद्ध पाठकों व सभी पंथ प्रेमी भाईयों एवम् बहनों! इस महापर्व के 'क्षमा' कुम्भ में गोते लगाकर, मन को पवित्र बनाएँ और इस जीवन रुपी बगीचा के फूलों को और अधिक तप, त्याग, संयम, आराधना, प्रार्थना, जप, सामायिक ध्यान आदि से महकाएँ, क्योंकि 'क्षमा' से बढ़कर इस संसार से मुक्त करनेवाला अन्य कोई तप नहीं, इसीलिए तो कहा गया है ''क्षमा वीरस्य भूषणम्''!

With Best Compliments

N.K. BAGRI
Mob.: 9884238349

A. K. Bagri
Mob.: 98410 85855

Ashoka Marketing Agencies

Importers & Dealers in: Chemicals Solvents Acid Mineral 168, Govindappa Naicken Street, Chennai, TamilNadu, Bharat- 600001 Off.: +91 44 25386740, 25380262, 25369465, 98416 37725
E.mail.: ashokamarketing123@gmail.co | E.mail.: ashokamarketing12345@gmail.co
Web: www.ashokamarketing.in

B.O.: 146, Mahatma Gandhi Road, (Ground Flr.), Bharat- 700 007.
Ph.: 22719959 Mobile: 7003281748, Email: ashokakol7@gmail.com

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मेरा राजस्थान

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला

1 प्रति ₹ 100/- नागौर 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-28509999

सम्पादक

बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2025-2027
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2025-27
License to post without prepayment'
Published on 28/08/2025 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

ADD Gel®
LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

24 SHADES

CALLIGRAPHY
GIFT OF CREATIVITY

Best Gift for Birthday

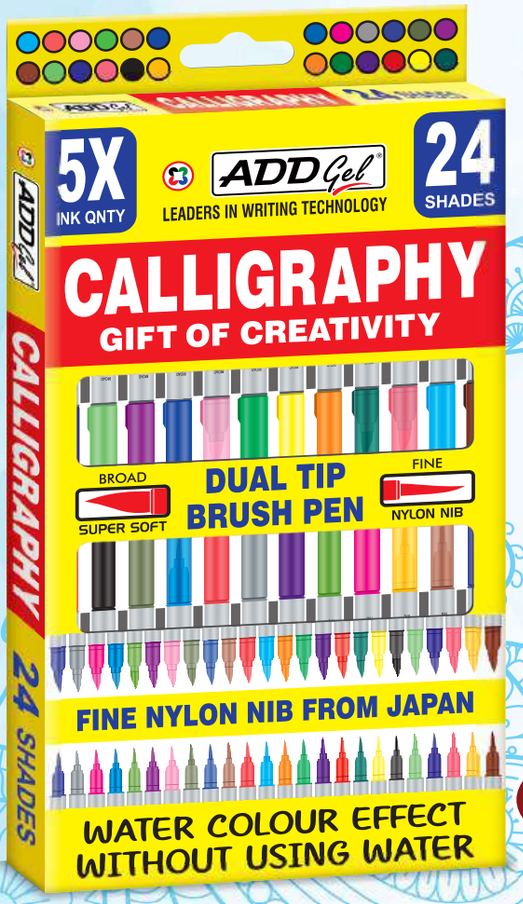

DUAL TIP BRUSH PEN

FINE NYLON NIB FROM JAPAN

BROAD
SUPER SOFT
FINE
NYLON NIB

MRP ₹450/- PER PACK

Make in India

www.shop.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-022-4015 8094
अणुडाक - mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना - www.merarajasthan.co.in